तंत्र कौमुदी
NFKU
निखिल तत्व सायुज्य श्री साधना महाविशेषांक
Eight Issue – OCTOBER 2011
Part -II
Tantra kaumudi
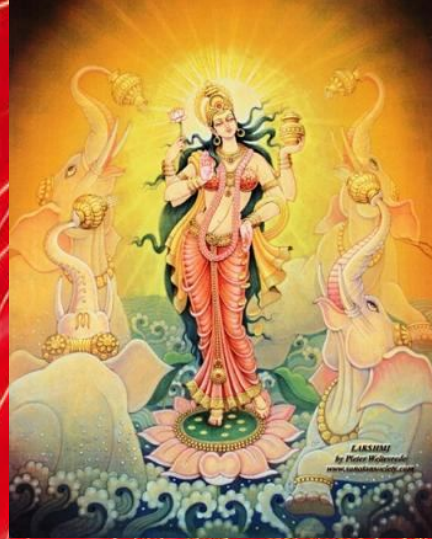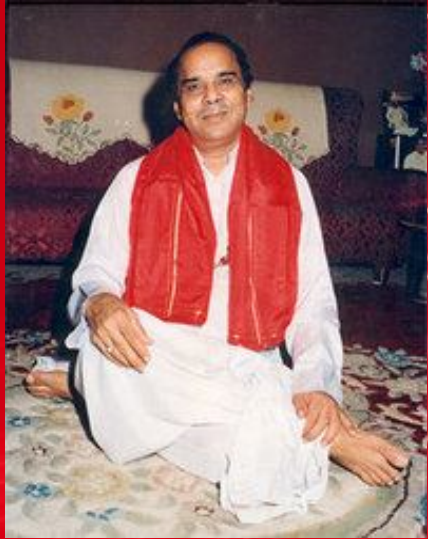
Purn nikhileshwaranand Prtyksh tatv siddhi sadhana
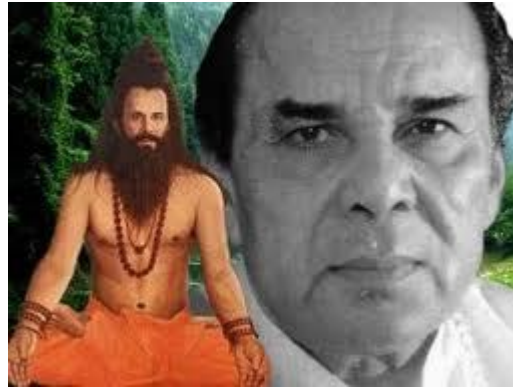
अब हमारे प्राणाधार पूज्य सदगुरुदेव दूर कहाँ ...

जीवन में कई बार मन बैचेन हो जाता है ये सोच कर की काश हमने सदगुरुदेव को देखा होता ,उनका साक्षात् किया होता ,उनसे शक्तिपात और दीक्षा पाई होती ,पर आज ये कहाँ संभव है ??

पर सत्य इससे बिलकुल विपरीत है। मुझे याद है की जब सदगुरुदेव ने ये उद्घोष दिया था की "**आने वाली पीढियाँ याद करेंगी की तुमने निखिलेश्वरानंद को देखा है**" और ये कोई सामान्य उद्घोष नहीं था, अपितु इसके पीछे उनके मन की पीढा भी थी, वे कालदृष्टा थे जिनके लिए भूत,वर्तमान,भविष्य कुछ भी अगोचर या छिपा हुआ नहीं था ,और इससे भी बड़ी बात ये थी की वे दूरदृष्टा थे जिन्होंने अपनी सभी योजनाये अपने जीवन में ही क्रियान्वित कर दी थी ,जिस के कारण सभी शिष्यों को उनका साहचर्य निरंतर प्राप्त होता रहे।

कितनी विचित्र बात है ना की हम तब ये विश्वास करते थे की सदगुरुदेव नित्य प्रति शिष्यों को दिशा निर्देश दिया करते हैं। परन्तु आज स्थिति बदल गयी है ,आज हमारी श्रृद्धा की डोर इतनी कमजोर हो गयी है की हमारा कुतर्की मन कदापि ये मानने के लिए तैयार नहीं होता है की सदगुरुदेव हमसे संपर्क करेंगे, या हमें साधना या जीवन सम्बन्धी दिशा निर्देश देंगे। इतने कमजोर विश्वास पर तो हमारा साधना जीवन टिका हुआ है।मैं यहाँ किसी तत्व विवेचना की बात ही नहीं कर रहा हूँ।

कोई गूढ़ ज्ञान की चर्चा नहीं कर रहा हूँ। यदि यहाँ कुछ बता रहा हूँ तो वो मात्र उन शिष्यों की पीड़ाएँ हैं जिन्होंने उस परमगुरु ,उस परम सिद्ध योगेश्वर के साहचर्य लाभ की अभिलाषा में ना जाने कितनी रात तकिये में मुँह छिपाए रोते हुए बिताए हैं, असंख्य रात्रि तकिये के कपड़ो पर आंसुओं से सदगुरुदेव की आकृति उकेरते रहे ।पर क्या किसी ने उनकी पीड़ा समझी ,नहीं ना।

क्या ये सब असंभव है ??

कदापि नहीं बहुतेरे साधक इस बात के गवाह हैं की सदगुरुदेव ने भावावस्था, ध्यानावस्था या स्वप्नावस्था में आकार उन्हें उनकी जिज्ञासाओं का समाधान दिया या उनकी इप्सित दीक्षा प्रदान कर उन पर अपने अनुग्रह की अजस्र वर्षा की। तंत्र की सम्भावना असीम है ,जहाँ से मानवीय सोच की सीमा समाप्त होती है वहाँ से तंत्र का आरंभ होता है। सदगुरुदेव ने अपने गृहस्थ जीवन में ही इन सूत्रों को अपने शिष्यों को प्रदान कर दिया था और वे सदैव कहते थे की मेरे शिष्य मेरे ज्ञान की पूँजी को सदैव संभाले रहेंगे।

मेरा ज्ञान वास्तविक तौर पर सदैव इनके साथ रहेगा ,क्योंकि इनका मेरी भौतिक संपत्ति से कोई लेना देना नहीं है अपितु इन्हें मेरे ज्ञान की प्यास है, और मैं इन्हें दीपक नहीं अपितु हीरक खंड और सूर्य बनाने के लिए ही सिद्धाश्रम से आया हूँ। बहुत बार जब वे किसी दीक्षा का विवरण देते थे तो साथ ही ये भी कह देते थे की मेरे अतिरिक्त इस पूरे ब्रह्माण्ड में ये ज्ञान तुम्हे कोई और नहीं दे सकता है और इसके आगे का क्रम तो कदापि कदापि किसी और को ज्ञात होगा ही नहीं।

राजयोग,राज्याभिषेक, सम्राटाभिषेक , पट्टाभिषेक के बाद कहाँ गया इसका अगला क्रम जिसे सिद्ध योगी "**ब्रम्हांड पार्श्विकरण दीक्षा**" के नाम से जानते हैं। कहाँ गयी "**पूर्णाभिषेक दीक्षा**" प्रदान करने का वो विधान जिसे पाने के लिए प्रत्येक साधक लालायित रहता है।

आज तो रसेश्वरी दीक्षा के लिए भी यही सुनने को मिलता है की "**सब सोना बनाना चाहते हैं**" अरे सोना बनेगा तो तब जब उस साधक को उसका विधान ज्ञात हो। क्या रसेश्वरी दीक्षा का इतना ही महत्त्व है जबकि **रसेश्वरी दीक्षा** जीवन और भाग्य को हीरक कलम से लिखने की क्रिया है जिसके विविध आयाम हैं।

"**पंचमहाभूत दीक्षा**" को कपोल कल्पना करार दे दिया गया है जबकि और भी कई **दुर्लभ दीक्षाओं का विधान सदगुरुदेव की ओजस्वी और दिव्य वाणी में आज भी मेरे और कई वरिष्ट गुरु भाइयों के पास सुरक्षित है**। और जो जब कहे मैं तब सुना सकता हूँ , **रिकार्डिंग तब भी होती थी** , अरे दीक्षा आप ही देंगे , क्योंकि आप को ही नियुक्त किया है , हमें नहीं।

पर जब इसके बाद भी शिष्य को मात्र भजन और नृत्य मिले तो साधक का जीवन कैसे प्रगति करेगा। कोई साधनात्मक उन्नति नहीं , तब मात्र सदगुरुदेव का आश्रय लेना ही श्रेष्ट होता है। और आज भी सदगुरुदेव द्वारा प्रदत्त "**गुरु आहूत मन्त्र**" उतना ही प्रभावी है जितना तब।

जो परमहंस होते हैं वे रिश्तों में नहीं अपितु अपने शिष्यों के कल्याण चिंतन में सदैव व्यस्त रहते हैं। इसके लिए उन्हें मात्र पूर्ण आग्रह युक्त ह्रदय चाहिए होता है और कुछ की आवशयकता कदापि नहीं होती। तंत्र के कई ऐसे विधान उन्होंने अपने शिष्यों को प्रदान किये हैं जिनका प्रयोग कर शिष्य आज भी सीधे उन्ही से मनोवांछित दीक्षा पूर्ण आग्रह के साथ प्राप्त कर सकता है।

सामान्य अवस्था में स्वप्नावस्था या ध्यानावस्था में ये दीक्षाएं या समाधान प्राप्त होते हैं ,जो की सामान्य घटना कभी नहीं कही जा सकती है क्यूंकि आप लाख किसी भी इष्ट की उपासना करे तब भी वो देवी देवता या शक्ति आपके स्वप्न में नहीं आएगी क्यूंकि **अचेतन मन परा तत्व को पकड़ ही नहीं सकता , ये तभी हो सकता है जब आप का मन पूर्ण चैतन्य हो आर आपकी प्रज्ञा का योग आपके इष्ट की या सद्गुरु की प्रज्ञा से हो गया हो।**परन्तु स्वप्न मात्र में नहीं अपितु अति उच्च अवस्था में यदि सतत मन्त्र का प्रयोग किया जाये तो निश्चित ही सूक्ष्म शरीर के द्वारा या प्रत्यक्ष भी शक्तिपात रुपी असीम अनुग्रह प्राप्त हो जाता है।

साबर महाविशेषांक में सदगुरुदेव आवाहन और दर्शन मंत्र का विवरण दिया गया है , जिसका लाभ बहुत से साधकों ने उसे प्रायोगिक रूप से करके उठाया है। हम जो भी प्रयोग तंत्र-कौमुदी में देते हैं वे अनुभूत या सदगुरुदेव द्वारा प्रदत्त होते हैं। जिन्हें निसंकोच आप प्रयोग करके लाभ उठा सकते हैं। आलोचना का दृष्टिकोण अपनी जगह सही है परन्तु वो तभी ठीक है जब पहले विषय वस्तु को परख लिया गया हो, अन्यथा कुतर्क का कोई जवाब नहीं है। आज अपने कलेजे में छिपाए हुए उसी प्रयोग को मैं आप सभी के सामने दे रहा हूँ , जिसका लाभ मेरे समेत बहुत से वरिष्ट गृहस्थ और सन्यासी भाइयों और बहनों ने लिया है।

ये साधना २१ दिनों की है और पूर्ण पवित्रता के साथ इस साधना को संपन्न किया जाता है , सामग्री के नाम पर सदगुरुदेव का तेजस्वी चित्र ही अनिवार्य है और एक स्फटिक माला तथा ५ पंचमुखी रुद्राक्ष की आवशयकता होती है। साधना के पहले गुरु मंत्र का सवालाख जप अवश्य कर ले तत्पश्चात ही इस दिव्य साधना में अग्रसर हो। पवित्रता अनिवार्य है।

नित्य ब्रह्ममुहूर्त में इस साधना को संपन्न किया जाता है इसमें दो दिव्य मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। हाँ ध्यान रखने योग्य बात है की साधक एक समय शुद्ध सात्विक भोजन करे और पूर्ण मानसिक शारीरिक ब्रह्मचर्य का पालन करे, ये कभी ना भूले की ये कोई सामान्य साधना नहीं है अपितु जीवन परिवर्तित करने वाली उस परम पुरुष की जगद्गुरु की साधना है ,उन्हें रोम रोम में आत्म-एकाकार करने की साधना है।

श्वेत वस्त्र धारण कर शुक्ल पक्ष के किसी भी गुरूवार को ब्रह्ममुहूर्त में उत्तराभिमुख अपने सामने बाजोट पर सदगुरुदेव का चित्र स्थापित कर ले ,इसके सामने अष्टगंध से एक वृत्त बना ले और उस वृत्त की रेखाओं पर पञ्च अक्षत की छोटी छोटी ढेरियाँ बना दें,और उस वृत्त के मध्य में ॐलिख दें ,उन ढेरियों पर एक एक रुद्राक्ष स्थापित कर दें। जहाँ ॐलिखा है वहाँ गुरु पादुका या गुरु यन्त्र स्थापित कर दें। इस गोले के और गुरु चित्र के मध्य घी का दीपक स्थापित कर दें। और पूर्ण विधान से सदगुरुदेव के चित्र और यन्त्र का पूजन करे।तथा उन रुद्राक्षों पर एक एक करके –

ॐगुरुभ्यो नमः

ॐनिखिलेश्वरानंद गुरुभ्यो नमः

ॐपरम गुरुभ्यो नमः

ॐपरात्पर गुरुभ्यो नमः

ॐपारमेष्टि गुरुभ्यो नमः

मंत्र का उच्चारण करके अक्षत,पुष्प,धुप ,दीप तथा नैवेद्य समर्पित करे। ये ५ ढेरियाँ और रुद्राक्ष पञ्च परम गुरु शक्ति की प्रतीक हैं। इसके बाद निम्न दिव्य मन्त्र की १६ माला पारद माला या स्फटिक माला से जप करे –

निखिलेश्वरानंद सिद्धि मन्त्र-

ॐ निं निखिलेश्वराय सिद्धिम् देहि देहि निं ॐ

तत्पश्चात **निखिल प्राणश्चेतना मंत्र** का १ माला जप करे-

निखिल प्राणश्चेतना मंत्र-

ॐ पूर्वाह सतां सः श्रिये दीर्घो येताः वदाम्यै स रुद्रः स ब्रम्ह स रुद्रये स चैतन्य आदित्याय रुद्राः वृषभो पूर्णाह समस्ते: मूलाधारे तु सहस्त्रारे, सहस्त्रारे तु मूलाधारे समस्त रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रय उत्तिष्ठ प्राणतः दीर्घतः एत्तन्य दीर्घाम भू: लोक,भुवः लोक,स्वः लोक,मह लोक,जन लोक,तप लोक,सत्यम लोक ,मम शरीरे सप्त लोक जाग्रय उत्तिष्ठ चैतन्य कुण्डलिनी सहस्त्रार जाग्रय ब्रम्ह स्वरुप दर्शय दर्शय जाग्रय जाग्रय चैतन्य चैतन्य त्वं ज्ञान दृष्टिः दिव्य दृष्टिः चैतन्य दृष्टिः पूर्ण दृष्टिः ब्रह्मांड दृष्टिः लोक दृष्टिः अभिर्विहृदये दृष्टिः त्वं पूर्ण ब्रम्ह दृष्टिः प्रास्यर्थम,सर्वलोक गमनार्थे,सर्व लोक दर्शय ,सर्व ज्ञान स्थापय, सर्व चैतन्य स्थापय,सर्वप्राण,अपान,उत्थान,स्वपान,देहपान,जठराग्नि,दावाग्नि,वडवाग्नि,सत्याग्नि,प्रणवाग्नि ,ब्रह्माग्नि,इन्द्राग्नि,अकस्माताग्नि,समस्तअग्निः,मम शरीरे,सर्व पाप रोग दुःख दारिद्रय कष्ट पीड़ा नाशय - नाशय सर्व सुख सौभाग्य चैतन्य जाग्रय,ब्रम्ह स्वरुप स्वामी परमहंस निखिलेश्वरानंद शिष्यत्व,स-गौरव,स-प्राण,स-चैतन्य,स–व्याघ्रतः,स-दीप्यत,स-चंद्रोम,स-आदित्याय,समस्त ब्रम्हांड विचरणे जाग्रय,समस्त ब्रम्हांडे दर्शय जाग्रय, त्वं गुरुत्वं ,त्वं ब्रह्मा, त्वं विष्णु,त्वं शिवोहं,त्वं सूर्य,त्वं इन्द्र, त्वं वरुण, त्वं यक्ष,त्वं यमः,त्वं ब्रह्मांडो, ब्रह्मांडो त्वं मम शरीरे पूर्णत्व चैतन्य जाग्रय उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ पूर्णत्व जाग्रय पूर्णत्व जाग्रय पूर्णत्वजाग्रयामि ||

इसके बाद पुनः **निखिलेश्वरानंद सिद्धि मन्त्र** की १६ माला जप करे तब जाकर ये क्रम पूर्ण होता है l यही क्रम सम्पूर्ण साधना काल में रहेगा और रही बात इस दिव्य साधना की तो आप जिस भी समाधान या दीक्षा की अभिलाषा रखते हैं , उसकी प्राप्ति स्वतः ही आपको प्रभाव दर्शा देगी l ये साधना एक अचूक सजगता और समर्पण का भाव साधक में व्याप्त कर देती है ,जिसके प्रभाव से साधक के चारो प्राण जाग्रत हो जाते हैं और वो सरलता से अपने प्राणाधार सदगुरुदेव के दर्शन कर सकता है और उनसे सीधे ही समाधान प्राप्त कर लेता है l सदगुरुदेव की असीम करुणा से ही इस प्रकार की दिव्य साधनाप्रकाश में आ पाई है l वे हम सभी के प्राण में हैं और जब भी कातर भाव से हम उन्हें बुलाएँगे वे सदैव की भांति हमारी ज्ञान पिपासा को शांत करने आयेंगे ही l इसे पढ़िए मत बल्कि करिये और प्रभाव देखिये l

==

Poorna Nikhileshvaranand Pratyeksha Tatva Siddhi Sadhna –

Many times it happens that our mind become anxious by the thought that, what if I would have seen Sadgurudev atleast once. One meet, a direct Shaktipaat by him and ofcourse Diksha. But is it possible now?

But the truth is exactly opposite of this fact. I remember well, that once Sadgurudev had announced "**the upcoming generation would remember that you have seen Nikhileshvaranand**". This was not a common announcement rather behind this statement his infinite pain was hidden. He was Kaaldrishta for whom watching past, present and future, nothing was hidden for him.

And top of his foresight was terrific that he had already planned everything, so that each shishya should get benefit of his existence. Isn't it strange that believed that Sadgurudev used to direct us every day. But today the circumstances are different. Today the thread of our devotion become very so weak that due to our suspicious heart doesn't trust on this fact that Sadgurudev remain contacted with us. Or he is guiding us in our sadhna life. On this weak trust our sadhna life is dependent.

Well, let me clear here I'm not indulging in any discernment. Even not discussing any secret, If I am telling something then i.e. For only those shishyas who have spent countless nights on bed hiding their creep by cusion that when we will see our revered guru. But does anybody realize their pain? No I guess..

Is it possible?

Never, many of them can evident that in Bhaavavastha, dhyanavastha or in swapnavastha Sadgurudev had given indication to them and fulfilled their curiousities via Ipsit Diksha he had shower blessings on them. Possibilities of Tantra is endless, where the logical mind of human end there the Tantra is started. Sadgurudev had given this sutra in his marital life itself.

He always said, "**My beloved shishyas would always treasure my knowledge form assets forever. Basically my knowledge would remain with them in actual sense. Because they are never concerned with my materialistic wealth rather they are seeker and thirsty for my knowledge. And I have come back from Siddhashram to make them not just a lamp but to make them a Heerak Khand and Sun**". Several times when he gives description about any Diksha, along with it he used to say nobody can give such knowledge apart from me in this whole universe and exceed it.

After **Raajyog, Raajyaabhishek, Samratabhishek, Pattabhishek** and next one is which is known between Siddh Yogis as "**Bramhaand Parshvikaran Diksha**". Well everyone is curious to know the procedure about "**Poornabhishek Diksha**".

Bad part is so many say about **Raseshvaari Diksha** that "**all wants make gold**" They don't know this fact that gold can be produce only when the correct procedure is known. Does the importance of Raseshvari Diksha keeps that much only, Basically Raseshvari Diksha is known for achieving hieghts in best luck and Heerak kalam procedure which have many dimensions.

"**Panch Mahabhoot Dikhsha**" is be called as a sheer fantasy whereas **there are several rare dikshas which are secure in sadgurudev's voice not only with me but also with the elder brothers also**. And whatever whoever say I can listen it properly**, that time was also recording facility was present**, are you giving diksha, because you only are appointed, not us naa… But still after all this if sadhak remains busy in singing bhajan and dance the how come he progress in his life. No sadhnatmak progress.

And surprisingly after all this question is no sadhnatmak progress, then only support can be demanded by Sadgurudev. And even sadgurudev given "**Guru Aahut Mantra**" is that powerful as it was before. Those who are Paramhans are not busy in welfare of their relatives rather they are indulged in welfare of their shishyas. For that they require fully devoted heart and nothing else is required.

There are various processes in Tantra which had given by sadguru via which still many shishyas are able to make contact with him directly and takes wishful dikshas whatever they wish too. In normal course of time in dreams, meditation they get these dikshas which is simply unususal. Because no use how many and how much you do your Ishta sadhna, **they would never appear before you..it is because the unconscious mind cannot catch the Para tatva, this can happen only when your mind is completely awakened and your pragya is connected with the your diety or sadguru's pragya.** But not only in dream but also in high level stage if continuously mantra chanting is done then via Astral body or in real also Shaktipaat form can be earned.

In **Saabar Mahavisheshank**, the sadguru avahan and darshan mantra has been explained whose benefits had been taken from so many sadhaks. Whatever experiments given in Tantra Kaumudi those are testes and self-experienced and more importantly given by sadgurudev. You can try it without hesitation and take benefit of it. The angle of criticism remains right at its place. But it was suited that time only when thing were tested properly whereas there are no solutions for arguments. Today those experiment which I have been kept in my heart since long is given whose benefits along with me many of old guru brothers and sanyasi brothers and sisters had taken.

This sadhna is done in 21 days of time with complete piousness. Things required are Sadgurudev's photo is must, one crystal rosary and Panchmukhi Rudraksh. Before sadhna gurumantra 1.25lakhs mantra chanting should have been done then only do this sadhna. Again m saying piousness and purity is must. Daily in early morning time brahma muhurt you have to do this sadhna. In this sadhna 2 divine mantras are used.

Oh yaa keep one thing in mind i.e. take veg food one time only. And complete celibacy mental and physical should be followed. Don't forget that this is very very rare sadhna which would changes life given by that supreme body. This sadhna is imbibing the tatva in each cell of body. Wear white clothes and on Thursday of Shukla Paksh you can start this sadhna facing towards east direction place Sadgurudev photo, place some flavoured ashtagandh and draw a rectangle, write **Om** in mid of it, on peaks of it establish one rudraksh and place guru Paduka and guru yantra. Around the circle near Sadguru photo light a butter lamp. And worship guru, yantra , paduka etc with all followed instructions. Then one by one on that rudraksha say

Om Gurubhyo Namah

Om Nikhileshvaranand Gurubhyo Namah

Om Gurubhyo namah

Om Paraatpar gurubhyo namah

Om Paarmeshti Gurubhyo Namah

After mantra chanting offer rice, flowers, dhup, lamp and sweet. These 5 dheries peak and rudraksh are sign of Panch Param Guru Shakti. Then after with this divine Mantra do 16 rosary of **parad rosary or crystal rosary.**

Nikhileshvaranand Siddhi Mantra –

Om Nim Nikhileshvaraaya Siddhim dehi dehi nim om

Then chant **Nikhil Praaneshchetna Mantra 1 rosary** –

Guru PraanasChetna Mantra

Om purvaah sataam sah shriye deergho yetaah vadamyai sa rudrah sa bramh sa rudraye sa chaitany aadityaay rudraah vrishbho purnaah samasteh mooladhare tu sahastradhare, sahastradhare tu mooladhare samst rom prtirom chaitany jaagray uttisthh praanatah deeraghatah aittny deergham ,bhuah lok, bhuvah lok,swah lok, mah lok , jan lok,tap lok , satyam lok , mam sharire sapt lok jagray uttisthh chaitany kundalini sahastradhar jagray bramh swarup darshay darshay jagray jagray chaitnny chaitany tvam gyan dristiah, divya dristiah , chaitany dristiah, purn dristiah, bramhaand dristiah, lok dristiah ,abhirviharadye dristiah, tvam purn bramh dristiah, praptyartham,sarv lok gamanarthe, sarv lok darshay, sarv gyan sthapay ,sarv chaitany sthapay, sarv praan, apaan ,utthan ,swapaan, deh paan, jathhragni, davaaagni, vadwaagni, satyaagni, pranvaagni, bramhaagni, indraagni, aakasmataagni, samst agniah, mam sharire, sarv paap rog dukh daridray kasht pida nashay nashay, sarv suck soubhagy chaitany jagray, bramh swarup swami paramhans nikhileshwaranand shishytv , sa-gourav, sa-praan, sa-chaitany, sa-vyaghratah, sa-deepytah, sa-chandrom, sa-aadityaay samast bramhaande vicharne jagray , samst bramhaade darshay jagray, tvam gurutvam, tvam bramha, tvam Vishnu, tvam shivoham, tvam sury, tvam indra, tvam varun, tvam yaksh, tvam yamah, tvam bramhaando, bramhaando tvam, mam shrire purnatv jagray uttisthh uttisthh purnatv jagray jagray purnatv jagrayami.||

There after again **Nikhileshvaranand Siddhi mantra** chant for 16 rosaries and then the serial goes complete. Same serial would be followed in whole sadhna time. And about Divya Sadhna for which ever diksha you wished to have, automatically you will get it. This sadhna gives you the required intension, awareness and feel for continuing in sadhna field, which impacts in all four directions of sadhak and easily meet the sadgurudev and contact directly too. It is ust because of Sadgurudev's infinite love, kindliness this sadhna comes in light. He is present in our Praan. And whenever we will call him heartly, definitely he will come and satisfy our all curiousity. Don't read it just rather practically do it.

Purn shaktiPaat siddhi sadhana

कैसे संचित रखे यह जीवन की सबसे अनमोल सदगुरुदेव कृपा

जब शिष्य जिज्ञासु बनकर अपने अज्ञान की निवृत्ति हेतु श्री सद्गुरु के चरणों में निवेदन ज्ञापित करता है , तब उसके निवेदन को स्वीकार कर अज्ञान रुपी अन्धकार का नाश करने के लिए सद्गुरु उसे ज्ञान का उपदेश देते हैं। वस्तुतः ये ज्ञान कभी सामान्य होता ही नहीं है ,क्योंकि ज्ञान की प्राप्ति के बाद ही मनुष्य अपने कर्म फलों को नष्ट करने का भाव और पराक्रम प्राप्त कर पाता है ,ज्ञानाग्नि ही प्रदीप्त होकर शिष्य के लिए शक्तिपात की भूमि तैयार करती है।

इसे यो समझा जा सकता है की किसान को बीजारोपण के पूर्व भूमि की उर्वरा क्षमता बढ़ाने के लिए भूमि को जोतना पड़ता है ।तत्पश्चात ही बीज का अंकुरण हो पाता है। ठीक वैसे ही बीज में छुपा हुआ ज्ञान का वृक्ष जो आचार विचार में पूर्ण प्रभाव के साथ हमारे व्यक्तित्व में ही आ जाये । सद्गुरु अपने तपः उर्जा के द्वारा अपने संचयित ब्रम्हांडीय ज्ञान को शिष्य में अपनी करुणा के वशीभूत होकर उड़ेल देते हैं, अर्थात बीज रोपण कर देते हैं,जिसके बाद शिष्य मात्र मन्त्र जप का आश्रय लेता है और उसे निर्दिष्ट या अभीष्ट ज्ञान की प्राप्ति होते जाती है ।

शक्तिपात के तीन प्रकार होते हैं-

मंद

मध्यम

तीव्र

इनके नाम पर जाने की कदापि आवशयकता नहीं है (क्यूंकि इन भेदों के भी ३-३ उपभेद हैं, और जिनकी चर्चा करना यहाँ हमारा वर्तमानिक उद्देश्य तो कदापि नहीं है, वो गूढ चर्चा फिर कभी और करेंगे),अपितु ये समझना कही ज्यादा महत्वपूर्ण होगा की शक्तिपात कर्मफल रुपी मल को हटाकर ज्ञान का बीजारोपण करने की क्रिया है । अर्थात हमारे कर्मों का जितना गहरा प्रभाव आवरण बनकर हमारे चित्त या आत्मा पर होता है सद्गुरु को उतनी ही तीव्रता का प्रयोग करना पड़ता है ,दोष निवारण हेतु उतना अधिक अपना तप प्रयोग करना पड़ता है।

और ये क्रिया तब तो अवश्यम्भावी हो ही जाती है ,जब शिष्य गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञानवाणी के भावार्थ को नहीं समझ पा रहा हो और उसका मन संशय से मुक्त नहीं हो रहा हो । तब ऐसे में समर्थ गुरु अपने ज्ञान को सीधे ही अपनी दृष्टि,वाणी या स्पर्श द्वारा शिष्य के भीतर उतर देते हैं जिससे कर्म फल के परिणाम स्वरुप बाह्य नेत्रो और बहिर्मन के ऊपर पड़ी अज्ञान की पट्टी भस्मीभूत हो जाती है ,और उसका साक्षात्कार उस सत्य से हो जाता है,

जो सत्य सद्गुरु द्वारा दिग्दर्शन कराया जा रहा हो। आज हम श्री मद भागवद गीता को कर्म की और प्रेरित करने वाला ग्रन्थ मानते हैं, परन्तु उसे पूरा सुनने के बाद भी क्या अर्जुन उसका भावार्थ समझ पाया ? क्या वो युद्ध के लिए तत्पर हो पाया? नहीं क्योंकि उसे तब ये ज्ञान नहीं था की जो सामने रथ पर खड़े हैं वो सामान्य सारथि या मित्र ही नहीं हैं अपितु ऐसे जगद्गुरु हैं जिनकी वंदना सम्पूर्ण ब्रम्हांड करता है। उसे गीता के उन दिव्य वाक्यों में छुपे अर्थ समझ ही नहीं आ रहे थे । वस्तुतः जितने भी शास्त्र या तंत्र ग्रन्थ रचे गए हैं वे तीन ही प्रकार के श्लोकों में रचे जाते हैं।

अभिधा

लक्षणा

व्यंजना

और सामान्य साधक या शिष्य के लिए इन श्लोकों के मर्म को समझना अत्यधिक दुष्कर है। तब अर्जुन भी इस मर्म को नहीं समझ पा रहे थे और तब कोई और चारा न देख कर कृष्ण जी को शक्तिपात की क्रिया करनी ही पड़ी और जो बाते लगातार समझाने के बाद ह्रदय में नहीं उतर पा रही थी वो शक्तिपात से सहज ही संपन्न हो गयी। उसके बाद जो हुआ वो हम सभी जानते ही हैं।

पर क्या मात्र शक्तिपात होने से ही साधक का अभीष्ट प्राप्त हो जाता है , नहीं वस्तुतः शक्तिपात की प्राप्ति के बाद भी साधक का जीवन पवित्रता युक्त नहीं होता है और वो नित्य प्रति की जिंदगी में मिथ्याचार, अशुद्ध भोजन और मलिन भाव से युक्त होता ही है और तब ऐसे में सद्गुरु ने जो शक्तिपात आपको प्रदान किया है वो आपके कर्मों के कारण क्षीण होते जाता है ,जैसे मिटटी के मटके में असंख्य महीन छिद्र होते हैं और जब हम उसे जल से पूरित कर देते हैं तो थोड़े समय बाद वो मटका धीरे धीरे रिक्त होते जाता है।

अर्थात उसमे जल लगातार नहीं पड़ेगा तो एक समय बाद वो पूरी तरह सूख ही जायेगा। साधक को भी शक्तिपात की प्राप्ति के बाद संयमित जीवन और साधना का नित्य प्रति सहारा लेना पड़ता है यदि वो ऐसा नहीं करता है तो ऐसे में उसे प्राप्त शक्तिपात भी धीरे धीरे सुप्त हो जाता है। और ये भी सत्य है की हम पर शक्तिपात की प्रक्रिया ब्रम्हांडीय शक्तियों द्वारा सृष्टि के आरंभ से ही हो रही है और आज भी होती है परन्तु ये इतनी मंद और सूक्ष्म होती है की हमें इसका अनुभव किंचित मात्र भी नहीं हो पाता है।

इसलिए यदि शक्तिपात के प्रभाव को निरंतर शरीर और आत्मा में संजो कर रखना है तो सदगुरुदेव प्रदत्त **शक्तिपात सिद्धि साधना** संपन्न करनी ही पड़ेगी ।इसके बाद आप उन सभी शक्तिपात के प्रभाव को आत्मस्थित कर पाएंगे जो पूर्व में आप पर हुए हैं या नित्य प्रति सिद्धाश्रम के महायोगियों द्वारा हम पर सूक्ष्म रूप से किये जाते हैं। ये एक अद्भुत और गोपनीय विधान है , जो सहज प्राप्य नहीं है।

किसी भी सोमवार से इस साधना को ब्रह्म मुहूर्त में प्रारंभ किया जा सकता है ।वस्त्र व आसन श्वेत होंगे ,पूर्ण शुद्ध होकर आसन पर बैठ जाये और सामने बाजोट रखकर उस पर रेशमी सफ़ेद वस्त्र बिछाकर उस पर अष्टगंध से निम्नांकित यंत्र उत्कीर्ण करके उस यंत्र के मध्य में अक्षत की ढेरी बनाकर उस पर घृत का दीपक स्थापित करे, तथा यन्त्र के पीछे गुरु चित्र तथा यन्त्र के सामने गुरु पादुका या गुरु यन्त्र स्थापित करे।

तत्पश्चातहाथ में जल लेकर सदगुरुदेव से प्रार्थना करे की "**हे सदगुरुदेव पूर्व जीवन से वर्तमान तक जिस भी दीक्षा शक्ति का आपने मुझमे संचार किया है।वे सदैव सदैव के लिए मुझमे अक्षुण हो सके इस निमित्त मैं ये दुर्लभ साधना कर रहा हूँ,आप अपनी अनुमति और आशीर्वाद प्रदान करें**" तथा **गुरु चित्र** और यदि **गुरु पादुका या गुरु यन्त्र** हो तो उन का दैनिक साधना विधि में दिए गए विधान अनुसार (या पंचोपचार विधि से) गुरु पूजन करे ।पंचोपचार पूजन के विषय में पूर्व अंकों में बताया जा चूका है। इसके बाद **नवीन स्फटिक माला** से **१६ माला गुरु मंत्र** की तथा **२४ माला पूर्ण शक्तिपात सिद्धि** मंत्र की जप करे।

पूर्ण शक्तिपात सिद्धि मंत्र–

ॐऐं ह्रीं क्लीं क्रीं क्रीं हुं जाग्रय स्फोटय स्फोटय फट् ॥

ये क्रम सात दिन का है,दीपक मात्र साधना काल में ही जले ,अखंड रखने की अनिवार्यता नहीं है, साधना के सभी सामान्य नियमों को अवश्य अपनाएं ।अंतिम दिन जप के पश्चात उस माला को ४० दिनों तक पूजा के समय धारण करे और बाद में उसे पूजन स्थल पर ही रख दे ।साधना काल के मध्य शरीर में तीव्र दाह उत्पन्न हो जाता है, गर्मी बढते जाती है अतः दुग्ध पान अधिक मात्र में करे, शरीर टूटता रहता है क्यूंकि आत्म रूप से व्याप्त शक्तिपात की तीव्र ऊर्जा रोम रोम में प्रसारित होते जाती है,चेहरे पर लालिमा और नेत्रों में आकर्षण व्याप्त हो जाता है । आप स्वयं ही इस अद्भुत मन्त्र के प्रभाव को देख पाएंगे, जरुरत है मात्र पूर्ण श्रृद्धा के साथ मन्त्र को अपने जीवन में स्थान देने की बाकि का काम तो स्वतः होते जायेगा।

==

Poorna Shaktipaat Siddhi sadhna

when Disciple became curious to release his lack of knowledge state and requests to sadgurudev, then his requests is been listen and Sadguru proceed some thought processing to vanish his lack of knowledge. Actually this knowledge is never been casual to any one, because after achieving any type of knowledge he actually gets the notion of destroying it. Knowledge fire zeal only prepares the base for shaktipaat procedure.

This can be understood by this way – if any farmer sows seeds in farms, but before sowing, first he cultivate and plough the land. There after he starts the sowing of seeds later which converts into huge trees. The hidden form of knowledge in seed became in future tree. Exactly same case with us whatever seeds inside us is cultivated by Sadguru and ultimate after his hard efforts we became tree. By Sadguru's meditational powers and energy the universal knowledge get established in us. This all happens just because of his infinite endless love and kindliness for us in his heart. This means he sows the seed, where after sheer support of mantra jap shishya get success in his wishes.

The Shaktipaat are of 3 types :-

Mand

Madhyam

Teevra

Don't go by the sheer name of it. (Because there are 6-6 sub secrets of it, as of now whose discussion is not in intended. That secret discussion might be taken some other time) rather it's more important to understand that Shaktipaat is that process which helps to excrete the filthy thoughts in us and cultivates the seeds by sowing in us to enlighten the light of purity.

It means as much dark and strong layer of our past life impacts had been engrossed in our mind that much powerful process have been used to remove the effects by sadguru which is possible only by transferring his hard meditational power and energy via Shaktipaat.

And this becomes so important when Shishya is enabling to understand the knowledge is given by Sadguru and his mind is not free from suspiciousness. In that case capable guru directly transfers the light of knowledge by eyesight, speech or by touch, in resultant the filthy layer of external eyes and mind gets disappeared and then he has been acquainted with the ultimate truth of life which is again lead by Sadguru.

Today we considered the holy book ShrimadBhagwat Gita as most inspirational book but after listening completely, still the question remains as it is that does Arjun understood it properly? Does he become instant ready to face the war? Answer is NO because at that time he was not having the light of knowledge is not just his driver or friend but also mentor of the world who is worshipped by whole world. Arun didn't understand the hidden divine sentences meaning of Gita. Basically however the Shastras and Tantra Granthas had been written and expressed in three forms of Shlokaas –

Abheedaa

Lakshanaa

Vyanjanaa

And for normal Sadhak this is quiet difficult to understand the depth of these shlokas. At that time even Arjun was also not able to understand it amd no other solution left apart giving Shaktipaat remained with Shree Krishna. The talks which Arjun was not able to get since long and lots of efforts, mere by shaktipaat he embibed it instantly so easily smoothly. Thenafter whatever happened we are welaware about it.

Is shaktipaat is sufficient for a sadhak to realise his wishes, Answer is 'No' even after having shaktipaat diksha the sadhak's life doesnt remain pure. In his daily routine life he is full of falsehood, impure food and dirty notions and in such condition the shaktipaat energy given by Sadguru reduces day by day. This reduces only becase of our Karmas, likewise in mud pot there are infinite minute wholes which are not seen by lamed eyes.

When we fill it with water but after some time the water level gets on reducing manner and ultimate it again becomes empty. It means time on time if we doesn't fill with water then it would get dry. For keeping it wet the water supply shouldn't be stop. After getting Shaktipaat Sadhak should lead his life very carefully and support of sadhna is must.

And if he doesn't do sadhna, slowly slowly the shaktipaat energy disappears. And this is also a truth, the shaktipaat process by universal power holders is already been started from beginning and at today's date too but it is quite slow and minute that we don't realize it. Therefore if you want to conserve the impact of shaktipaat in you, then the Shaktipaat Siddhi Saadhna is the only solution. Then only you can imbibe the impacts which have been done in past and also at present done by Siddhaashram's Mahayogis upon you.

This is a wonderful and secret process which really rare. On any Monday you can start with this sadhna in Bramha mahurt (early morning auspicious time) Cloths and asana should be white in color. Clean and bath yourself and then be seated, establish the ashtagandha yukta yantra on small table covered with white cloth. Put some rice in middle of it and then light the butter lamp. Place Sadguru picture behind the yantra and place the Guru paduka and guru yantra before the small table.

Then take some water in palm and pray to Sadgurudev " **Oh my revered Sadgurudevji with due respect I would like to say something, since first birth to this birth, whichever dikshas you have transmitted in me, it should get resume in me forever for that purpose I'm pursuing this sadhna. I just want your permission and blessings".** Then as per instruction do worship guru paduka, guru pujan as u do on daily basis. About Panchopchaar Pujan process already been told in previous article. Then with **New Crystal Rosary (Navin Sphatik Mala**) do 16 rosaries gurumantra and 24 rosaries **Poorna Shaktipaat Siddhi Mantra** jap.

Poorna Shaktipaat Siddhi Mantra –

Om aim hreem kleem kreem kreem hoom jaagray sfotay sfotay fatt.

This should be done for seven consecutive days, Light the lamp in sadhna period only. Not needed on continuity (Akhand) follow all general instruction same as any sadhna. On last day after chanting wear that rosary for 40 days while worshipping time and after place it again at puja place. Repeat it every day till 40 days.

While in sadhna period sudden hotness would arise in body, body heat would increase so increase your milk intake. Body pain will be there as the astral form of Shaktipaat's sharp energy flows drastically in each cell of our body. Facial glow would increase day by day. Eyes would become more attractive and effective. You only can experience the after effects of this sadhna. What needed is complete belief on sadhna in personal life rest things are automatically managed for you

Adwitiy brAmhAtv guru sAdhAnA

कैसे संभव हो ,पूज्य सदगुरुदेव के ब्रम्ह स्वरुप के दर्शन ....

साधक के जीवन का सौभाग्य चरम पर होता है जब वो अपने सद्गुरु की विराटता को अपने दिव्य नेत्रों से देख सके ,उनके ब्रह्म रूप को देख सके अपनी आत्मा,अपने जीवन में उतार सके। ब्रह्म का तात्पर्य है अपने आत्मस्वरूप को समझना ,उससे परिचित होना।उस ज्ञान के द्वारा जीवन के उन रहस्यों को समझना जिसके द्वारा साधक अपनी कुंडलिनी जाग्रत करता हुआ आज्ञा चक्र तक पहुचता है और उस आज्ञा चक्र का भेदन करता हुआ शरीर के सर्वोच्च शिखर सहस्रार को जाग्रत करता हुआ उससे झरते हुए आनंद और अमृत का पान करने की क्रिया संपन्न करता है। मगर ये आनंद दो ही तरीकों से प्राप्त हो सकता है –

कुंडलिनी जागरण कर कुंडलिनी को आज्ञा चक्र से भेदित कर सहस्रार तक पहुँचाना।

या सद्गुरु के चरणों का आश्रय लेकर उनसे अत्यधि गोपनीय **ब्रह्मत्व गुरु मन्त्र** प्राप्त कर ,उसकी जप शक्ति से ही इस गृहस्थ जीवन में रहते हुए सहस्रार भेदन कर पाना।

पहला तरीका अत्यधिक दुष्कर है और उसमे सतत अभ्यास व निर्देशन की आवशयकता होती ही है। कई बार मात्र एक चक्र को स्पंदित करने में ही पूरा जीवन चला जाता है सम्पूर्ण कुंडलिनी की बात कौन कहे। परन्तु जो दूसरा तरीका है वो कही ज्यादा प्रभावकारी और सफल है ,जिसमे सद्गुरु की शक्ति का ही आश्रय लेकर कही सुगमता से शिष्य सहस्रार को जाग्रत कर सकता है और आज्ञा चक्र का पूर्ण भेदन हो जाने के कारण उसे वह ज्ञान प्राप्त हो जाता है जिसे वेद "**ब्रह्म रहस्य**" के नाम से जानते हैं। और तब उसे अपने सद्गुरु की विराटता प्रति क्षण दृष्टिगोचर होती रहती है। इसके बाद साधक के जीवन में याचकवृत्ति का कोई स्थान नहीं रहता है ,अपितु वो प्रकृति का साथ तटस्थ होकर सहचर भाव से ही देता है ,साधक के लिए ऐसे में कुछ भी ,कोई भी ज्ञान अगम्य नहीं रहता है।

इस साधना का प्रारंभ सदगुरुदेव के सन्यास दिवस या किसी भी गुरूवार को महेंद्र काल से प्रारंभ करते हैं।

इस साधना में ध्यान रखने योग्य बात मात्र इतनी है की मूल मन्त्र के पहले और बाद में **११-११ माला गुरु मंत्र** की करना है और बीच में निम्न मंत्र की ५१ माला करनी है ,साथ ही साथ ये भी ध्यान रखना है की शुक्रवार से इस साधना को ब्रह्म मुहूर्त में ही संपन्न किया जाता है और ये कुल १४ दिनों की साधना है सभी सामान्य नियमों का पालन करते हुए नित्य गुरु पूजन करना है और सदगुरुदेव हमें अपने विराट स्वरुप के दर्शन करवाए और ब्रह्म रहस्य से अवगत कराये, इसी भावना से स्फटिक माला से जप करना है।वस्त्र व आसन श्वेत ही रहेंगे। बाजोट पर गुरु चित्र ,गुरु पादुका और शक्तिपात साधना में जो यन्त्र बना है ठीक उसी यन्त्र का निर्माण कर बाकि साडी प्रक्रिया वैसी ही करनी है।

ब्रह्मत्व गुरु सिद्धि मन्त्र-

ॐपरात्पर ब्रह्म स्वरूपं निर्विकल्पं आज्ञाचक्र दयैति गुरुवर्यै नमः।।

साधना के मध्य में ही साधक का ध्यान लगने लग जाता है और उसे विविध दृश्य दिखाई देने लगते हैं।वे सभी दृश्य भविष्य या भूत काल से सम्बंधित होते हैं,जिनका हमारे जीवन से गहरा सम्बन्ध होता है ।धीरे धीरे आप उस दृश्य के अर्थ को समझने लग जाते हैं और एक समय बाद आप जिस किसी का भी चिंतन कर मात्र १०८ बार मंत्र का जप कर नेत्र मूँद कर ध्यानस्थ होते हैं, आपके नेत्रों के समक्ष उस व्यक्ति की सभी गतिविधि स्पष्ट होते जाती हैं।

==

Advitiya Bramhatva Guru Sadhna-

The good fortune is any sadhak is on peak when he himself see the Viraat Swarup of his Saadguru by his own eyes, our soul could see his brahma rup, imbibe it in our life. That's the only wish. Here Bramha means – to understand our own internal form, to get introduce. And with that knowledge fathom the secrets of life. Via which activating the energy of Kundalini reached upto Agya Chakra and passing it reached at the highest peak of body i.e. sahastrar and feels and equally realize the state and he ends up the process. But this happiness can be discover only by two ways –

Activation of Kundalini and taking Kundalini to agya chaktra crossing all other chakras and reaching upto the Sahastraar.

Or requesting into the holy feets of Sadguru and earning very secretive **Brhmatva Guru Mantra** from him, only with that Shakti one can reach to its highest in this marital life also.

First way is very difficult and it continuously needs practice and guidance. Most of the times whole life can go for activating only one chakra so don't ask for whole kundalini activation approx. time. But the second way is most effective and successful way, in which Sadguru's power is taken as support and shishya easily reached upto the sahastrar level. After crossing Agya chakra he gets the knowledge which is known as "**Universal Secrets (Brahma Rahasya)".** And then he is able to see all the time viraat swarup of his sadguru. Then after there is no place of requesting mode in sadhak's life, rather he accompanies the nature with same level. In that way for Sadhak nothing remains impossible.

You can start this sadhna on Sadguru Sanyas Day or any Thursday of Mahendra Kaal.

In this Sadhna only one thing which you should keep in mind i.e. Before and after of Mool Mantra **11-11 rosaries guru mantra** are must and in mid of it **51 rosaries**, along with that keep in mind that you should finish it on Friday early morning time i.e. Bramha Mahurt. This is 14 days sadhna followed with all general instructions with daily guru pujan too. And sadgurudev himself express their Viraat swarup and aware us with the universal secrets. With the same feeling proceed for sadhna with Sphatik (crstal) rosary. Clothes and Asana should be of white color. On small table place the Guru Picture, Guru Paaduka and the yantra used in Shaktipaat Saadhna. Produce similar yantra and complete the sadhna with same procedure as before.

Brahmatva Guru Siddhi Mantra –

Om Paraatpar Brahma Swarupam nirrvikalpam agyachakra dayeeti guruvaryai namah.

In between of sadhna sadhak's meditation happens automatically. And various dreams become visible which are related to his past and future, these are deeply related to our present life. Gradually you are able to grab the meaning of those dreams and certain point of time about whomsoever you think of and chant the mantra for 108 times and sheer closed eyes with concentration, all the activities of that person appears as picture.

Nikhil tatv saayujy bhAgvati raj rajeshwari sadhana

यह साधना रहस्य मिल जाना ही सदगुरुदेव की पूर्ण कृपा ही तो हैं ...

"राज राजेश्वरी दुर्लभं जायते नरः॥

पूर्णत्वं श्रेष्ट सिद्धित्वं न अन्यत्र वदेत् क्वचित॥

पूर्व जन्म कृत दोष इह जन्मनि यद् भवेत् ।

सर्व पाप विमुच्यन्ते चैतन्य शुद्ध साधनवै॥

राज राजेश्वरी कुण्डल्योत्थान एव च।

देह प्राण स चैतन्य शुद्ध ब्रह्म समो नरः॥

अनंगोसम सौन्दर्य यौवनं तेजस वदेत्।

सम्मोहनम् कामत्वं प्राप्यते राज दीक्षतं॥

सहस्रार त्व जाग्रत्वं अमृतो पान त्वं सदः।

सर्व रोग विमुच्यन्ते दीर्घजीवी भवेत् नरः" ॥

जीवन को संवारने के लिए यूँ तो विविध साधनाएं प्रचलित हैं ,परन्तु मात्र राज राजेश्वरी साधना का योग यदि निखिल तत्व से हो जाये तो जीवन में कुछ भी असंभव नहीं रह जाता है ,और ये सिद्धाश्रम का और समस्त देवों का कहना है ,सभी ऋषि मुनि और सिद्ध योगियों ने इस साधना को जीवन में सर्वोपरि माना है।

श्वेत बिंदु रक्त बिंदु रहस्य के अन्वेंशन काल में जब मैं स्वामी प्रज्ञानंद जी के पास पंहुचा था तो उन्होंने मुझे बताया था "की पारद विज्ञानं के समस्त दिव्य रहस्यों का ज्ञान और कुंडलिनी को एक ही झटके में मूलाधार से सहस्रार तक पंहुचा देने वाली एक मात्र साधना राज राजेश्वरी साधना है और चूँकि ये भगवतपाद सदगुरुदेव परमहंस निखिलेश्वरानंद प्रणीत है, अतः मात्र मन्त्र जप से ही जीवन के वो सभी अभीष्ट साधक को प्रदान कर देती हैं जो की अप्राप्य ही हैं, आज मेरे जीवन में मुझे जो भी प्राप्त हुआ है उसका आधार यही साधना है"।

उपरोक्त श्लोक ब्रह्मऋषि विश्वामित्र जी के हैं,जो उन श्लोको में स्पष्ट कहते हैं की जीवन का उत्थान कुंडलिनी जागरण के द्वारा ही होता है ,और सामान्य साधक के वश में कुंडलिनी जागरण की क्रिया संभव नहीं है।परन्तु यदि राज राजेश्वरी साधना संपन्न कर ली जाये तो यही परिस्थिति पूर्णतया अनुकूल हो जाती है, जो भी पुरुष जीवन में अनंग के सामान सुन्दर ,यौवन शक्ति से परिपूर्ण होना चाहते हैं और स्त्री रति के सामान कोमल,तेजस्विता युक्त अपार सौन्दर्य की स्वामिनी बनना चाहती हैं उसके लिए इस साधना से श्रेष्ट उपाय कोई और नहीं हो सकता।

जिस प्रकार जंगल की सूखी हुयी घास और पत्तियों को प्रचंड अग्नि एक क्षण में जला देती है ठीक उसी प्रकार ये साधना पूर्व जीवन और इस जीवन के सभी पापों को एक ही क्षण में समाप्त कर भस्मीभूत कर देती है।

मैंने विगत तीव्र साधना विशेषांक में भी यही कहा था की ये साधना तंत्र का आधार है ,और इसके बाद कुछ भी अप्राप्य नहीं रहता है। इस साधना के प्रभाव से साधक सहस्त्रार से टपकते अमृत को धारण करने की शक्ति प्राप्त कर लेता है ,और वही अमृत उसके बिंदु के साथ मिलकर ओजस में परिवर्तित हो जाता है तथा निर्जरा देह और पूर्ण ऐश्वर्य की प्राप्ति कराता है।

किसी भी शुक्ल पक्ष की पंचमी को इस साधना का प्रारंभ किया जाता है , साधना के लिए गुरु यन्त्र,चित्र और श्री यन्त्र की आवशयकता होती है, श्वेत वस्त्र पहनकर मध्य रात्रि में इस साधना का प्रारम्भ करे, **पूर्ण भगवती राज राजेश्वरी की साधना में सफलता हेतु ये साधना की जा रही है और अपनी सम्पूर्ण कलाओं के साथ गुरु तत्व युक्त होकर वे मेरे जीवन में उतरे यही आशीर्वाद आप सदगुरुदेव से मांगे** श्वेत वस्त्र, आसन, श्वेत पुष्प और खीर से भगवती और सदगुरुदेव का पूजन करे।इन दोनों यंत्रों का पूर्ण पूजन शास्त्रोक्त पद्धति से पंचोपचार करने के बाद स्फटिक माला से सबसे पहले निम्न गुरु तत्व मंत्र की ११ माला जप करें और उसके बाद राज राजेश्वरी मन्त्र की १०८ माला करे,फिर पुनः उपरोक्त गुरु तत्व मन्त्र की ११ माला जप करे।

गुरु तत्व मन्त्र-

ॐ गुरु शिवायै शिव गुरुवर्यै नमः

दिव्य भगवती राजराजेश्वरी मंत्र-

AING HREENG SHREENG

दीपक शुद्ध घी का होना चाहिए और इस साधना क्रम को ७ दिनों तक संपन्न करना है।इस साधना के प्रभाव से स्फटिक माला विजय माला में परिवर्तित हो जाती है।इस माला को पूरे जीवन भर धारण करना है।राज राजेश्वरी मंत्र में **ग** की ध्वनि आयेगी। ये एक अद्विय्तीय साधना है ,जिसके द्वारा सम्पूर्ण जीवन को जगमगाहट से भरा जा सकता है।

==

Nikhil Tatva Sayujya Bhagvati Raaj Raajeshvari Sadhna –

"Raaj Raajeshvari durlabham jaayte narah..

Poornatva shreshtham siddhitvam na anyatra vadet kvachit

Purva janma krut dosh ih janmani yad bhavet

Sarva Paap vimuchhyante chaitanya shuddha sadhnave

Raaj Raajeshvari kundalyoutthaan eiva cha

Deh praan sa chaitanya shuddha brahma samo narah

Sammohanam kaamatvam prapyte raaj deekshitam

Sahastraar tva jaagratvam amruto paan tva sadah

Sarva rog vimucchyante deerghjeevi bhavet narah.

To make life beautiful many sadhnas are famous, but mere by Raaj Raajeshvari Saadhna yog if merges with Nikhil tatva then nothing would remain impossible in life. And this has not only said by all gods but also by Siddhashram yogis too that this is the ultimate saadhna in life. In discovery time of Shvet bindu Rakta Bindu secrets, I reached near Swaami Pragyaanand ji.

He told me, " that secrets of paarad Vigyan and taking kundalini from down to top in seconds can only be done by this sadhna only and this is given by Bhagvaadpaad Sadgurudev Paramhans Nikhileshvaranand." Therefore sheer by mantra chanting this fulfills the wishes of sadhak. And today whatever I got in my life is just because of this sadhna.

Above Shloka is of Bhrmhahrishi Vishvamitra said clearly that life's progress can be done by kundalini activation only, and common sadhak can do it. But if he accomplishes Raaj Raajeshvari saadhna then situation would become favourable for him. A man who wants to be as handsome as Anang with full manly power and the lady wants to become like Rati as delicate, charming and gorgeous then this sadhnaa is the best solution for such typ of seeker.

Exactly when the dry stems of jungle get fire in seconds similarly this sadhna fires ur past lifes and even this life paap karmas in seconds. I have given in previous articles that this sadhna is base of Tantra. And after achieving this nothing remain impossible. The impact of this sadhna is sadhak get energy to handle the Amrut drops comes out from sahastraar and that mixed up with the Bindu and converts you completely with healthy and beautiful body.

On any Shukla Paksha you can commence this sadhna. For this you need Guru yantra, guru photo and shree yantra. Wear white clothes with complete cleanliness and purity in midnight start this sadhna. "**Requests Sadgurudev that i am doing Poorna Bhagvati Raaj Raajeshvari sadhna to get completeness in all arts and bow me guru tatva in my life and success in this sadhna"** and then on white asana, white flowers, white sweet kheer to Bhagvati and Sadgurudev and do the worship with all instructions.Do Panchopchaar pujan of both the yantras and chant first guru mantra for 11 rosaries and then raaj Raajeshvari mantra 108 rosaries , then again guru mantra for 11 rosaries.

Guru Tatva Mantra –

Om Guru Shivaaya Shiv Guruvaryai namah

Divya Bhagvati Raaj Rajeshvari Mantra-

Aing Hreeng Shreeng

Lamp should be of pure butter and continue and complete this sadhna for 7 days. With impact of this sadhna the Crytal rosary would convert in Vijay rosary. You have to wear this rosary forever whole life. In Raaj Rajeshvari Mantra the sound of '**ga**' would come. This is really an astonishing sadhna which will enlighten your life..

Mahanisha shri sadhana purn vidhan

इस पूर्ण क्रम को करके तो देखें फिर देखे कैसे सदगुरुदेव और श्री कृपा आप पर बरसने लगती हैं

जीवन की आपाधापी में बहुधा हम मूल उद्देश्य से ही वंचित रह जाते हैं ,किसी पर्व विशेष की सार्थकता कैसे हो सकती है,इसका कदाचित भान ही आज लोगो को होगा। आज पर्व मात्र बाह्य आडम्बरों में ही घिरा रह गया है ,पर्व का मूल चिंतन तो लुप्त प्रायः ही हो गया है, फिर वो चाहे गुरु पूर्णिमा हो,होली हो,रक्षा बंधन हो या फिर दीपान्विता या दीपावली का ये पावन पर्व।

वस्तुतः प्रामाणिक विधान का ही आश्रय लेने पर जीवन में उन्नति संभव है ।और जीवन में सदगुरुदेव की कृपा के बगैर तो विधान की प्राप्ति कदापि संभव नहीं है । हमारे लिए दीवाली का अर्थ मात्र दीवाली और इसका पूजन ही है , परन्तु हम ये नहीं जानते हैं की धन त्रयोदशी से भाई दूज तक के पांच दिवसों की क्या महत्ता है

और इन पांचो दिवसों का विधिवत तांत्रिक क्रम से पूजन करने पर ही महानिशा साधना का ये पर्व पूर्ण सर्वांगीण उन्नति देता है और वर्षभर के लिए पूर्ण अभय और उन्नति का वरदान भी ।दीवाली की रात्रि बीतने के साथ ही उत्साह मंद हो जाता है और साधना कक्ष में प्रवेश की इच्छा ही समाप्त प्रायः हो जाती है ,क्यूंकि दीवाली पर मंत्र कर लिया तो अब क्या जरुरत है ,और इसके पीछे अज्ञान हो मूल कारण होता है। काश की इन 5 दिवसों का गूढ़ अर्थ हम समझ सके और तदानुसार हम उसका उचित प्रयोग कर सके, खैर दीर्घ विवेचन प्रस्तुत करने का ये सही अवसर नहीं है इसलिए संक्षेप में उस विधान को यहाँ स्पष्ट कर रहे हैं जो सदगुरुदेव ने अपनी प्रसन्नता के क्षणों में वर्णित किया था। यदि हम इस विधान का प्रयोग करते हैं तो सपरिवार अभय,पापों से मुक्ति, धन-शक्ति,प्राकृतिक आपदाओं से मुक्ति और पूर्ण सुरक्षा की प्राप्ति होती है।

- कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को हम सभी धनतेरस के रूप में जानते हैं। परंपरा अनुसार स्नान करने के बाद संध्याकाळ में मृत्यु और रोगों से मुक्ति के लिए ३ दीपकों को घर के बाहर रखना चाहिए,ये दीपदान परिवार की तरफ से **यमराज** के लिए होता है जो वर्षभर के लिए अकालमृत्यु के भय को क्षीण कर देता है। दीपक प्रज्वलित करते समय निम्न प्रार्थना करनी चाहिए-

"मृत्युना पाश-हस्तेन कालेन भार्यया सह।

त्रयोदश्यां दीप-दानात् सूर्यजः प्रीयतां " ॥

ततपश्चात रात्रि के प्रथम प्रहर में **आरोग्यधिपति भगवान धनवंतरी** का ध्यान और पूजन करना चाहिये ,याद रखियेगा की पंचोपचार पूजन वगैरह क्रियाएँ पहले भी कई अंको में स्पष्ट की जा चुकी है और सदगुरुदेव "**मन्त्र तंत्र यंत्र विज्ञान**"पत्रिका में सैकडो बार पूजन विधान दे चुके हैं।अतः पूजन विधान वह से देख ले।यहाँ मात्र मैं गुह्य विधान स्पष्ट कर रहा हूँ। पूजन स्थल में भगवती लक्ष्मी और गणपति जी का पूर्ण चित्र स्थापित होना चाहिये और सदगुरुदेव और भगवान गणपति के पूजन के बाद निम्न ध्यान करे।महत्वपूर्ण तथ्य ये है की परिवार में जितने सदस्य हों लाल वस्त्र बिछाकर उतनी ही सुपारी स्थापित की जानी चाहिये बाजोट पर।मुख पूर्व की तरफ होना चाहिये।

ध्यान-

"चतुर्भुजं पीत-वस्त्रं सर्वालन्कार-शोभितं ।

ध्याये धन्वंतरिम् देवं सुरासुर-नमस्कृतं" ॥

तत्पश्चात दीर्घायु प्राप्ति हेतु सम्पूर्ण परिवार की तरफ से संकल्प लेकर दीर्घायु लक्ष्मी का पंचोपचार पूजन कर दीर्घायुष्य लक्ष्मी मन्त्र की ११ माला जप संपन्न करे ,ये जप लाल हकीक या मूंगे की माला से करे ,माला प्राण प्रतिष्ठित होनी आवश्यक है।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौं अमृत्यु लक्ष्म्यै नमः।

प्रातः काल समस्त सुपारियों को दक्षिण दिशा में निर्जन स्थान पर फेक दें।

- **रूप चतुर्दशी या नरक चतुर्दशी विधान**- सौंदर्य प्राप्ति और पूर्ण पाप मुक्ति के लिए इस दिन साधना की जाती है।

स्नान करते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए **अपामार्ग** को अपने मस्तक पर घुमाना चाहिये –

सीता लोष्ट सहा युक्तः सकन्तक-दलान्वितः ।

हर पापमपामार्ग ! भ्राम्यमाणः पुनः पुनः ॥

स्नान के बाद निम्न मन्त्र में से प्रत्येक का तीन तीन बार उच्चारण कर जलदान करना चाहिये अर्थात जल अर्पित करना चाहिये और "श्री भीष्म" को भी तीन अंजुली जल अर्पित करना चाहिये।

यमाय नमः

धर्मराजाय नमः

मृत्यवे नमः

अन्त्काय नमः

वैवस्वताय नमः

कालाय नमः

सर्व भूत क्षयाय नमः

औदुम्बराय नमः

दध्नाय नमः

नीलाय नमः

परमेर्ष्ठिनी नमः

वृकोदराय नमः

चित्राय नमः

चित्र गुप्ताय नमः

और सांयकाल घर के बाहर धर्म-अर्थ काम मोक्ष रुपी चार बत्तियों का दीपक प्रज्वलित करना चाहिये,इसके बाद ही अन्य स्थानों पर दीपक प्रज्वलित करना चाहिये

तत्पश्चात तिल के तेल का दीपक जलाकर उसका विधिवत पूजन कर ११ माला मन्त्र सौभाग्य लक्ष्मी मन्त्र का जप करना चाहिये –

ॐ श्रीं ह्रीं सौभाग्य लक्ष्म्यै श्रीं अखंड सौभाग्य देहि देहि ह्रीं श्रीं नमः ॥

- महानिशा श्री विधान – धन ऐश्वर्य की अतुलनीय प्राप्ति के लिए आज दीपावली की रात्रि मे साधना की जाती है,आज की रात्रि को किसी भी प्रकार के मन्त्र को स्वयं के लिए जाग्रत किया जा सकता है, आज की रात्रि काली काल जाग्रत होता है जिस समय किसी भी मन्त्र का जप करने से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। और एक और पद्दति है जिसमे पूजन तो लक्ष्मी का ही होता है किन्तु वो अष्ट सिद्धि संयुक्त हो जाता है अतः भविष्य मे जब भी अष्ट सिद्धि साधना करना हो तो साधक इसी श्रीयंत्र पर कर सकता है जिस पर उसने निम्न विधान किया हो।

पूजन स्थल पर पूर्व की तरफ मुह करके बैठना चाहिये और सामने लक्ष्मी गणेश की मूर्ती और श्रीयंत्र की स्थापना करना चाहिये,हाँ एक बात ध्यान अवश्य रखे की ये विधान मिथुन लग्न मे होना चाहिये जो की प्रचुर संपत्ति और ऐश्वर्य के साथ साथ सिद्धियों और संतान सुख की भी प्राप्ति होती है और याद रखिये की यदि हम सीधे ही स्थिर लग्न यथा वृषभ और सिंह मे हम सीधे पूजन करते हैं तो जो संपत्ति हमारे पास है ,अनजाने मे हम उसी को स्थायित्व दे देते हैं,फलस्वरूप जो प्रगति और उच्चता जीवन मे वर्ष भर आणि चाहिये, वो कदापि नहीं आती है,जब आप नवीन ऐश्वर्य का प्रयत्न करेंगे और उस ऐश्वर्य को स्थायित्व देंगे तभी तो आपको वर्ष भर मनोवांछित लाभ होगा।

रात्रि मे सर्वप्रथम सदगुरुदेव,गणपति और भगवती लक्ष्मी का ध्यान कर मनोयोग पूर्वक षोडशोपचार पूजन करना चाहिये तत्पश्चात-

गं श्रीं गं

मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करते हुए कुमकुम और केसर से रंजित अक्षत को बाये हाथ मे लेकर दाहिने हाथ से श्रीयंत्र पर अर्पित करना चाहिये, इसके बाद पुष्प व अक्षत को निम्न मन्त्र बोलते हुए श्रीयंत्र पर अर्पित करें।

ॐ चपलायै नमः पादौ पूजयामि

ॐ चंचलायै नमः जानुनी पूजयामि

ॐ कमलायै नमः कटिं पूजयामि

ॐ कात्यायन्यै नमः नाभिं पूजयामि

ॐ जगन्मात्रे नमः जठरं पूजयामि

ॐ विश्व वल्लभायै नमः वक्ष-स्थलं पूजयामि

ॐ कमल वासिन्यै नमः हस्तौ पूजयामि

ॐ कमल पत्राक्षयै नमः नेत्र त्रयं पूजयामि

ॐ श्रियै नमः शिरः पूजयामि

पुनः निम्न मन्त्र बोलते हुए पुष्प व अक्षत अर्पित करे –

ॐ अणिम्ने नमः

ॐ महिम्ने नमः

ॐ गरिम्णे नमः

ॐ लघिम्ने नमः

ॐ प्राप्तयै नमः

ॐ प्राकाम्यै नमः

ॐ ईशितायै नमः

ॐ वशितायै नमः

तत्पश्चात निम्न मन्त्र पढते हुए पुनः अक्षत और चन्दन अर्पित करे

ॐ आद्य लक्ष्म्यै नमः

ॐ विद्या लक्ष्म्यै नमः

ॐ सौभाग्य लक्ष्म्यै नमः

ॐ अमृत लक्ष्म्यै नमः

ॐ कमलाक्ष्यै नमः

ॐ सत्य लक्ष्म्यै नमः

ॐ भोग लक्ष्म्यै नमः

ॐ योग लक्ष्म्यै नमः

तत्पश्चात निम्न कुबेर मंत्र की १ माला जप करे –

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कुबेराय धन धान्य समृद्धिम् देहि दापय नमः

इसके बाद ११ माला निम्न ***अभीष्ट सिद्धि लक्ष्मी*** मन्त्र की करे

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं हुं ॥

मन्त्र जप संपन्न होने के बाद घर और बाहर रखने के लिए दीप को थाली या सूपे मे सजा ले और निम्न मन्त्र पढते हुए उनका पूजन अक्षत छिडकते हुए करें और उसके बाद दीपकों को जहाँ रखना हो रख दे-

अग्नि ज्योति सूर्य ज्योतिः चन्द्र ज्योतिस्तथैव च।

उत्तमः सर्व ज्योतिनां दीपः अयं प्रति-गृह्यतां ॥

दीपक अखंड रूप से पूरी रात्री तक प्रज्वलित रहे यह साधना का एक महत्वपूर्ण नियम है.

- धान्य लक्ष्मी अन्नपूर्णत्व प्रयोग- पूरे वर्ष भर प्रचुर धान्य सुख पाने हेतु ये प्रयोग दीवाली के दूसरे दिन किया जाता है और इस लघु प्रयोग से अन्न भण्डार भरे रहता है रसोई मे।

दीवाली के दूसरे दिन सूर्योदय के पूर्व ही एक ताम्बे के कटोरे मे ५ प्रकार के धान्य भर कर उसके सामने निम्न मंत्र की ५ माला मन्त्र जप कमाल गत्ते की माला से करे और उसके बाद उस धान्य या अनाज को सूर्योदय के साथ ही छत पर या बाहर पक्षियों के लिए बिखेर दे ,और प्रभाव तो आप देखेंगे ही।

मन्त्र-

श्रीं अन्नपूर्णे प्रियन्ताम् सह श्रियै नमः

- रक्षा कवच दूज विधान- भाई दूज के दिन बहन जिस सूत्र को भाई की कलाई पर बांधती है उसे निम्न मन्त्र से ३२४ बार अभिमंत्रित करने के बाद ही भाई की कलाई पर बांधा जाना चाहिये,ये क्रिया परिवार का वरिष्ट सदस्य या कोई भी संपन्न कर रक्षा सूत्र को बहन को दे दे ताकि उन सूत्रों को बहन भाई को तिलक लगा कर उनकी कलाई पर बाँध सके और वर्ष भर की रक्षा भाइयों को प्राप्त हो सके।ये क्रिया मध्यान्ह काल के पहले संपन्न हो जानी आवश्यक है। जितने लोगों को सूत्र बांधना है,उतनी संख्या मे सूत्र लेकर लाल रंग की धोती पहन कर पूर्व दिशा की और मुँह कर मंत्र करना है।

ॐ रक्ष रक्षिणी रक्षात पूर्ण रक्षेश्वराय नमः।

इस प्रकार ये महानिशा श्री प्राप्ति विधान पूर्ण होता है, आप इस विधान के साथ अन्य मन्त्रों का जप भी दीपावली की मध्यरात्रि मे कर सकते हैं यथा,अघोर,शैव,शाक्त मन्त्रों का ,वो आपके ऊपर निर्भर है। जो मूल विधान है वो आपके लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत कर दिया है।

===

Mahanisha Shri sadhana complete procedure

In the race of the life many times we miss our prime goal, how the ultimate significance of the special days to be receive least people might be aware of that. In current time the festival days have become outer fake pomp only, the main objective related to the special feast are lost, rather it is guru purnima, Holi, Raksha bandhan or it is about sacred festival of Diwali or Dipaanvita in other words.

In fact, the progress of the life is only possible with authentic procedures. And in the life it is impossible to get such processes without blessings of Sadgurudev. For us, the meaning of diwali remains poojan of diwali only but we are actually not aware about the significance of the five important days from Dhan Chaturdashi to Bhai Dooj and by completing five days tantric ritualistic procedures of poojan this festival of mahanisha grants complete progress and blessings of completeness for one whole year.

When dipawali night ends the complete enthusiasms for sadhana slowly ends and wish to enter in sadhana room gets dissolve because mantra chanting on diwali has been done what does more of it requires? After this thinking responsibility lay of unawareness. May we understand complete importance of these five says and can use the precious time; anyways it is not time to give description of it thus here by the description of the procedure is given which sadgurudev provided with blessings in happiest moments. If we complete the procedure then safety, freedom from sins, monetary wealth power, relief from natural disaster and complete safety could be gain.

- kartik krushn trayodashi is famous among all as Dhan teras. Traditionally after having bath in the evening one should place 3 lamps (dipak) our side the house to get relief from diseases and death, This lamp offerings are for YamaRaaj by the family which removes fear of premature death. While lighting up the lamp one should pray as follow.

“Mrutyunaa paash-hastena kaalena bhaaryayaa saha

Trayodashyaam deep-daanat suryajah priyataam”

After that in the first face of night (pratham prahar) mediating and poojan of health god dhanawantari should be done. Do note that panchopachara poojan had been given in previous issues and sadgurudev even had given that hundreds of time in "Mantra Tantra Yantra Vigyan". Thus poojan vidhan could be noted from there. Here I am just describing the secret process. In worship place picture of lord ganapati and goddess lakshmi should be established and after Sadgurudev and ganapati poojan one should meditate as follows; here important point is one should establish as no. of betel nuts on the red cloth placed on wooden-mate (baajot) as no. of family members are there. Face should be facing east direction.

Meditation –

"chaturbhujam peet-vastram sarvaalankaar-shobhitam
Dhyaaye Dhanavantarim devam Suraasur-namaskrutam"

after that for to have long life take sankalpa on behalf of whole family; after lakshmi panchopachaar poojan chant 11 rosary of Dirghayush Lakshmi mantra. The chanting should be done with red hakeek rosary or Munga rosary, rosary should be charged (pran pratisthit)

Om aeim hreem shreem kleem hsOm amrutyu lakshmyei namah

In early morning throw all the betel nuts in south direction at the uninhabited place.

-Procedure of Roop chaturdashi or Narak chaturdashi – sadhana to have beauty and get relief from sins are to be done on this day.

While bathing one should chant the following mantra rolling apaamaarg on the head-

Seta losht sahaa yuktam sakantak-dalaanvitah
Har paapamapaamaarg! Bhraamyamaanah punah punah

After bath one should offer water by chanting every mantra three times and **"shri Bhishma"** should be offered water three times.
Yamaay namah
Dharmaraajaay Namah
Mrutyave Namah
Antkyaay namah
Veivaswataay namah
Kaalaay namah
Sarv bhoot kshayaay namah
Audumbaraay namah
Dagdhaay namah
Neelaay namah
Paramersthinee namah

Vrukodaraay namah
Chitraay namah
Chitra guptaay namah

And at evening one should light lamp containing four lights (chaturmukhi) which represent four aspect of life Dharma, artha, Kaama, Moksha. After that only other lamps should be lighted.

After that one should light lamp of sesame oil and after poojan of the same one should chant 11 rounds of the saubhagya lakshmi mantra

Om Shreem Hreem Saubhaagy Lakshmyei Shreem Akhand Saubhaagy Dehi Dehi Hreem Shreem Namah

-MahaaNisha Shri Vidhan – Today on diwali night sadhana is done to have complete wealth and prosperity, in today's night any mantra could be awaken for the self, in today's night kaalee kaal stays awake at that particular time any mantra can give a desired accomplishment. And there is one more way in which poojan of lakshmi is done but that remains merged with asht siddhi thus in future whenever sadhana for asht siddhi is to be done sadhak can do it in the same shri yantra on which process has been done.

One should sit facing east in the worship place and establish idol of lakshmi ganesha and shriyantra in front, here one should remember that the process should be done in Mithun Lagna which grants full wealth & prosperity accomplishment with children wishes and do even remember that if we directly does the process in Sthir Lagna Vrishab or Sinh lagn then in that condition unknowingly we gives stability of current situations and wealth which resulting loss of the progress and prosperity which we should gain for whole year, when you give establishment of the new prosperity then you will have progress of the same and desired results for one complete year.

In the night with devotion do the shodopachaar poojan of sadgurudev, ganapati and lakshmi after that-

Gam shreem Gam

The rice coloured with kum kum and kesar should be taken in right hand and those should be offered on shriyantra with 108 chants of the above mantra from left hand; after that offer flowers and rice on shriyantra chanting mantras below.

Om chapalaayei namah paadau poojayaami
Om Chanchalaayei namah jaanunee poojayaami
Om Kamalaayei namah katim poojayaami
Om Katyaayanyei namah naabhim poojayami
Om Jaganmaatre namah jatharam poojayaami
Om Vishv Vallabhaayei namah vaksh-sthalam poojayaami
Om Kamal Vaasinyei namah hastou poojayaami
Om Kamal patraakshayei namah Netr trayam poojayaami
Om shriyei namah Shirah Poojayaami

Again offer flowers and rice with mantras below
Om animne namah
Om Mahimne namah
Om garimne namah
Om laghimne namah
Om praptyei namah
Om praakaamyei namah
Om ishitaayei namah
Om vashitaayei namah

After this again offer rice with sandal

Om Aadhy lakshmyei namah
Om vidhya lakshmyei namah
Om saubhagya lakshmyei namah
Om Amrut lakshmyei namah
Om kamalaakshyei namah
Om saty lakshmyei namah
Om bhog lakshmyei namah
Om Yog lakshmyei namah

After this, chant one round of the kuber mantra given below

Om aim shreem hreem kuberaay dhan Dhaany samruddhim dehi daapay namah

After that chant 11 rosary of abhisht siddhi lakshmi mantra

Om shreem hreem shreem praseed shreem hreem shreem hum

After mantra chanting is completed one should decorate the lamps to be placed in/ out house in a plate and chanting the below mantra one should do the poojan with rice and place the lamp

Agni jyoti sury jyotih Chandr jyotistathiev ch
Uttamah sarv jyotinaam dipah Ayam prati-Gruhyataam

Here, it is very important rule for this sadhana is that the lamp should stayed single lighted (akhanda) for whole night.

-dhaanya lakshmi annapurnatv prayog- to have grain lakshmi for one whole year the sadhana is done on next day of diwali and with this small prayog kitchen stays filled with grains and commodity

On the next day of diwali, before sun rise one should fill five types of grains in a copper bowl and should chant five rounds of the mantra with kamalgatta rosary and after that in sunrise time spread that grains on terrace or outside of the house for birds, you will feel the effect of the sadhana.

Mantra-

Shreem annapoorne priyantaam sah shriyai namah

-Raksha Kavach Dooj Procedure- the sutra which is tied to the brother by sister on this day should be mantra powered (abhimantrit) with the following mantra, any of the elder member of family can even do the process and give it to the sister so that sister can tied it after doing tilak and complete security to the brother could be gain. This process should be completed before noon

The no. of the person going to tied, the same quantity of the sutra should be taken and mantra jaap should be done facing east direction wearing red dhoti.

Om raksh rakshinee rakshaat purn raksheshwaraay namah

This way the mahanisha shri prapti vidhan is completed. With this mantra you can even do other mantra chantings in dopawali rather aghora, shaiv, shakt or whatever you think of. The main procedure has been given here for benefit of all.

Soot RAHSYAM -8

Surya vigyan aur kaal chakra

सूर्य विज्ञानं और काल चक्र

त्रिनाभिमती पञ्चारे षण्नेमिन्यक्षयात्मके।

संवत्सरमये कृत्स्नम् कालचक्रम् प्रतिष्ठितं॥

तीन नाभियों से युक्त है सूर्य के रथ का चक्र,अर्थात भूत भविष्य और वर्तमान ये तीनो काल ही सूर्य रथ चक्र की तीन नाभि है,नाभि अर्थात जहाँ स्पंदन होता हो प्राणों का।वेदों मे काल को प्राण ही तो कहा गया है। और सूर्य इन प्राणों का अधिपति है,अर्थात जहाँ कालमयी दृष्टि की बात आती हो या अपनी दृष्टि को काल के परे ले जाकर व्यापकता प्रदान करनी हो तो सूर्य की साधना करनी ही पड़ेगी और उनके रहस्यों को आत्मसात करना ही पड़ेगा।

बहुधा साधकों के मन मे सूक्ष्म शरीर सिद्धि का सरलतम विधान जानने की बात आती है ,परन्तु शास्त्रों मे ऐसी कोई क्रिया स्पष्ट नहीं है ,जिसके माध्यम से सरलतापूर्वक स्थूल शरीर से सूक्ष्म शरीर को प्रथक कर उन गुह्य और अनबुझे स्थानों की यात्रा की जा सके,जहाँ आज भी प्राच्य आध्यात्मिक उर्जा बिखरी पड़ी है और जहाँ जन सामान्य के कदम पड ही नहीं सकते,इसलिए ये स्थान अबूझ ही रह गए हैं और अबूझ रह गयी है

यहाँ पर दिव्य उर्जाओं की उत्पत्ति का रहस्य भी ।जब सिद्ध मंडल से साधनात्मक ज्ञान प्राप्ति की बात आती है तो हमारे चेहरे मात्र लटक ही सकते हैं क्यूंकि हमने कभी सदगुरुदेव की व्यापकता को समझा ही नहीं,अन्यथा उनसे सूर्य विज्ञानं के ऐसे ऐसे रहस्य प्राप्त किये जा सकते थे जो की कल्पनातीत ही कहे जा सकते हैं।

हमने मात्र पदार्थ परिवर्तन को ही सूर विज्ञानं की प्रमुख उपलब्धि माना है और समझा है परन्तु हम ये नहीं जानते हैं की प्राण रहस्य को समझ लेने के बाद किसी भी लोक मे गमन,ग्रहों पर नियंत्रण और कुंडलिनी भेदन इत्यादि की प्राप्ति अत्यधिक सरल हो जाती है। सूर्य की सप्त किरणों और उनके रंगों मे कुंडलिनी जागरण, काल-दृष्टि की प्राप्ति और ब्रह्माण्ड के अबूझे रहस्य हस्तामलकवत दृष्टि गोचर होने लगते हैं। सप्त रंगों मे बिखरी सूर्य की किरणों का सम्मिलित रूप श्वेत है जो की व्यापकता का परिचायक है और परिचायक है पूर्णता का भी।

भला कैसे ???

क्या आप जानते हैं की सूर्य के सप्त रंगों से लोकानुलोक गमन का गहरा सम्बन्ध है, सविता मंत्र का मूल ध्वनि मे किया गया उच्चारण आपके शरीर को अणुओं के रूप मे विखंडित कर देता है और ये विखंडन मनोवांछित लोक मे पहुचकर वापिस अपना मूल स्वरुप पा लेता है, अक्सर ऐसे मे इन अणुओं के बिखर जाने का भय होता है परन्तु सूर्य विज्ञानं का अध्येता ये भलीभांति जानता है की सूर्य प्राणों का परिचायक है ,अर्थात प्राणशक्ति की सघनता और उससे प्राप्त बल,विखंडित अवस्था मे भी हमारे शरीर के अणुओं को बिखरने से बचाए रखती है ,और अणुओं के चारो और एक आवरण बना देती है जिसके कारण ब्रह्मांडीय यात्रा के मध्य शरीर के अणु किसी भी बाह्य आघात से पूरी तरह सुरक्षित रहते हैं ,

और उनकी मनोवांछित लोकों मे जाकर साकार होने की कामना मे कोई बाधा नहीं आती है ,और एक बार जब कोई मनोवांछित लोक मे पहुच जाता है तो वह देह वहाँ के वातावरण के अनुकूल बन जाती है और तब वहाँ के रहस्य और विज्ञानं को समझना सहज हो जाता है । वस्तुतः सूर्य की किरणों के सात रंग यथा बैगनी,जामुनी,नीला,हरा ,पीला,नारंगी और लाल का सप्त लोको से गहरा सम्बन्ध है –

भू,भुवः ,स्वः ,मह :,जनः,तपः और सत्यम, और इस सम्बन्ध को ज्ञात करने के लिए हमें श्वेत की अर्थात आदित्य के रहस्य को समझना पड़ेगा , क्यूंकि ये सभी रंग सम्मिलित होकर श्वेत का ही विस्तार करते हैं ।तभी कालचक्र का सहयोग लेकर आप कालभेदी दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं और ये कोई जटिल कार्य नहीं है ।यदि साधक **सूर्योदय के पहले पूर्व की तरफ मुख करके ओम का गुंजरन ७ मिनट तक नित्य करे और फिर सूर्योदय के साथ ही ७० मिनट तक गायत्री मंत्र का जप और फिर पुनः ७ मिनट तक ओम का गुंजरन**।

यदि इस क्रिया को ३ रविवार तक नित्य दोहराया जाये तो सूर्य के मध्य मे होने वाले विस्फोटों का मूल अंतर्गत कारण हम भली भांति समझ सकते हैं और उर्जा की उत्पत्ति का रहस्य भी ज्ञात हो जायेगा,क्यूंकि ये ओम की ही ध्वनि है जो की इस क्रम से प्रयोग करने पर बाह्य सूर्य का अन्तः सूर्य से तारतम्य बिठाकर रहस्यों के आदान-प्रदान की क्रिया सरल कर देती है।और इस प्रकार सविता मन्त्र का सहयोग आपको कालचक्र की विविध शक्तियों का स्वामी बना देता है तब कालातीत दृष्टि पाना भला कहाँ असंभव रह जाता है।

==

SOOT RAHASAYAM- SURYA VIGYAAN AND KAAL CHAKRA

Trinabhimati panchaare Shanneminyashayatmake!

Sanvatsarmaye Kritsram Kaalchakram Pratishthitam!!

In Vedas these kaals means three dimensions of time i.e. present, past and future are considered as the life energy and our navel is the central pivotal point where all the functions which are necessary for our existence is continuously going on but the most dynamic fact is that these three time dimensions or we can say navel portions are working as wheels for the chariot of rotating sun.

Now the important thing which one should keep in his/her mind is that Sun is honored as the owner of this life energy so if one wants to have the capacity to see beyond the time or we can say across the time than it is important to have the blessings of Sun ….wait wait!! Not only blessings besides he should be one with all the secrets and mysteries related with it (Sun). Several saadhak wants to know the easiest way which can help them to transform their hard-core body (sathool shreer) into the transparent or micro one (suksham shreer) so that without wasting any more time they can visit all the secret places where even today spiritual energy is sprinkling its aura and these places are and will be remain unvisited by common people just because of these the secret that why these places are full of such spiritual energy is still remains unsolved.

When questions are raised regarding to have the knowledge from Sidhmandal than without showing lifeless faces we have no second option to do as we didn't try ever to understand the extension of universal commanding power who is no-one but our revered Sadgurudev otherwise from him we can came to know unimaginable and unbelievable secrets from him about our issue i.e. Soot Rahasayam.

We are feeling our head in the air on our knowledge that we can transfer metals through it but just imagine how everything became so easy if we came to know that through sun the procedure of astral journey (Lok gaman), controlling power over planets and kundlini bhedan could become easy to easiest. Simultaneously such things as Kundlini Jaagran, the power of Kaal Drishti and all the unsolved ultimate mysteries related to our universe get starting resolved on their own with the colorful seven rays of sun. Don't forget that collectively all they seven different colorful rays of sun is of white in color which is the symbol of completeness as well as of expansion.

Now the most important question which says KNOCK! KNOCK!! To our mind is how it is possible!!!!

So let me solve this mystery for you……do you people don't know that there is a close relation between the seven colors of sun and astral journey or we can say move from one planet to another that too with your own body……Confuse!!!

Let me more modify it if we enchant Savita manta with its proper intonation (mool dhvani) than this mantra have a capacity to divide our body in its basic atoms and these atoms get their basic real body when it enters in its desired planet….one thing which always frighten us is that what happen if these atoms get spread or misplaced so the answer is that a person who has the knowledge of this science knows that sun is the source of life energy

so this energy give the power of stability and unity to the atoms at the time of this diversion and this unity works as a protecting sheet of atoms from any type of destruction during astral journey and body gets its true form as soon as it enters into its desired planet and easily becomes habitual according to its new found land and also that person easily can learn or understand the science of that planet too. Basically there is a close relation between the seven colors of sun that are- purple, move, blue, yellow, orange and red and of seven lokas (sapt lok) that are **Bhu, Bhuvah, Swah, Maha, Janah, Tapah and Satyam**.

So to understand the relation between them we should understand the secret of white which is unique in itself as these colors collectively create white one because if you understand this bonding then you can easily with the help of Kaal Chakra ,have the power to see beyond the time i.e. called Kaal Drishti but this will only happen **when a saadhak who wants to have this power stand on his legs facing east and enchant OM for seven minutes then Gayatri Mantra for next seventy minutes then again OM for next seven minutes daily.**

If sadhak repeats this procedure daily for consecutive three Sundays then easily he can come to know the secrets of give and take internal and external mysteries which always and continuously occur in the core of sun and he also come to know the fact ,

that this is nothing but this OM sound which is responsible for the balancing and making easy this give and take process. So this Savita Mantra can make you the owner of all the different powers of Kaal Chakra then after that how can one even thinks that it is impossible to see beyond the time…..IS IT REALLY……I DON’T THINK SO.

SWARN RAHSYAM -8

अद्भुत रहस्य आपके लिए ही

रस-तन्त्र के अन्वेंषण काल मे सदगुरुदेव की कृपा से मेरा साक्षात्कार उन अद्भुत सूत्रों से हुआ जिन्हे की रस सिद्धों के मध्य अभी तक गुप्त ही रखा गया था और मात्र गुरुमुखी परंपरा से ही शिष्यों को प्रदान किया जाता था, साथ ही मैं ये बात भी बता दूं की ये सूत्र अनेकानेक बरसों से इन सूत्रों को कोई प्राप्त भी नही कर पाया......... क्यूंकी जो मापदंड इन सूत्रों की जानकारी के लिए साधकों मे होने चाहिए थे वी भी अप्राप्य ही थे....... परंतु सदगुरुदेव की असीम कृपा से पुनः ये सूत्र हम सभी साधकों और शिष्यों के मध्य उपलब्ध हुए हैं.

क्यूंकी सदगुरुदेव की सोच अन्या विद्वजनो से भिन्न ही रही है.....अन्य विद्वांो का मत जहाँ पर ये रहा है की पहले सुपात्र या कुपात्र को देखो वही सदगुरुदेव का मत रहा है की ज्ञान को बिखेरते चलो ,जिसमे ज़रा सी भी उर्वरा शक्ति होगी वहाँ ये परिष्कृत बीज स्वयं ही अंकुरित, पुष्पित और पल्लवित हो जाएगा. अतः पात्रता को साधक के लिए छोडो. लाभ तो बस वही उठा पाएगा जो इस ज्ञान को प्रयोगात्मक रूप से आत्मसात कर पाएगा..

सामान्यतः साधकों का खेचरत्व या आकाश गमन के प्रति जिज्ञासा स्वाभाविक है,और वे ये भी जानते हैं की आकाश गमन या खेचरत्व के लिए कुम्भक का कितना महत्व है कुम्भक के द्वारा ही शरीरस्थ वायु को रोक कर अपने शरीर को शून्य मे उठाया जा सकता है और वायु गमन किया जा सकता है .... पर क्या आपको ये पता है की सामान्य कुम्भक से तो ये संभव ही नही है क्यूंकि कुम्भक के द्वारा शून्य मे उठा तो जा सकता है,किंतु उत्थित अवस्था मे आप बात चीत नही कर सकते,यहा तक की कोई कोई साधक तो बाह्य-ज्ञान भी खो बैठते हैं,इसके अलावा उर्ध्व वायुमंडल मे चलते हुए समय समय पर प्रतिकूल प्रवाहशील वायु का आघात लगने से पतन का भय भी उत्पन्न हो जाता है.परंतु................किरात कुम्भक कर लेने पर देह शून्यमय हो जाता है. सामग्रा देह को संकुचित और प्रसारित करने की क्षमता का विकास होता है.

देह को शुद्ध कर उसके किसी अंग मे वायु पूर्णा कर रखने का नाम ही किरात कुम्भक है.इसी कुम्भक के वारा विशुद्ध वायु को देह मे भर लिया जाता है. ऐसे मे जब शून्यस्थ होते हैं, तो बाह्य ज्ञान भी बना रहता है और प्रतिकूल वायु का प्रभाव भी नही होता और बात चीत भी की जा सकती है..ऐसे मे अति-प्रबल और शक्तिशाली तेज़रशि के दर्शन और संस्पर्शन से भी ज्ञान नष्ट नही होता. लेकिन क्या ये इतना सहज है ????

नही ना...... पर रस-तन्त्र मे पारद के द्वारा (जो रस से रसेंद्र की यात्रा पूर्ण कर चुका हो- मतलब जिस पर दिव्यौषधियों का संस्कार हो चुका हो, रत्नो और स्वर्ण का जारण हो चुका हो) गुटिका का निर्माण किया जाता है और इस दौरान नवार्ण मंत्र का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है . सिद्धा कुंजिका स्तोत्रा जिसका प्रयोग सभी मंत्रों के उत्किलन और सिद्धिकरण के लिए किया जाता है उसमे ये पंक्तिया ज़रूर याद रखिए की खाँ खीं खूं खेचरी तथा.. मतलब हे देवी खाँ खीं... के रूप मे आप खेचरत्व शक्ति प्रदान करने वाली हो . और ये खाँ बेज ही क्षम अर्थात आकाश बीज बन जाता है और शरीर का गुरुत्वाकर्षण आपके नियंत्रण मे कर के आपको खेचरत्व दे देता है और ऐसा होता है अवश्य होता है नवार्ण मंत्र के द्वारा ही. बस वर्णो का क्रम गुरु निर्देशानुसार परिवर्तित करना पड़ता है.

ब. सूर्योदय का पहला मंडल ऋक-मंडल कहलाता है. इस मंडल की 16 किरणों की अधिष्ठात्री शक्तियों को हम षोडश मात्रकाओं के नाम से जानते हैं और इन मात्रकाओं का समन्वित रूप ही राज राजेश्वरी षोड़शी त्रिपुर सुंदरी हैं. इनका उत्किलन कर जब हम अभिषिनचितिकरण की क्रिया करते हैं

तो हमे सहज ही सूर्य विज्ञान का ज्ञान प्राप्त हो जाता है .ये क्रिया बाह्य उपादान जैसे की लेंस के साथ भी हो सकती है या बगैर किसी बाह्य उपादान के भी संभव होती है. इस प्रक्रिया के लिए आप जिस गुटिका का निर्माण करते हैं वो संपूर्ण वर्णों के मंत्रों से सिद्ध होती है . जितने भी वर्ण हैं उनकी अपनी अपनी एक शक्ति होती हैं

और उनका विशेष ध्यान भी तथा उनका एक मंत्र भी , इन मंत्रों को पूर्ण रूपेण जागृत कर जब उस वरणात्मक मंत्र के द्वारा जब हम गुटिका या विग्रह का निर्माण करते हैं तो ये गुटिका शून्य सिद्धि या पदार्थ परिवर्तन हेतु सूर्य सिद्धि से हमे युक्त कर देती है . अब ये वरणात्मक मंत्र क्या है???? तो इसके विषय मे संक्षिप्त मे इतना कहना ही पर्याप्त है की जैसे का वर्ण का कोई अर्थ नही होता है ,लेकिन उस का के साथ प+उ+र का संयोग कराया जाए तो कपूर बनता है

जिसका अर्थ भी है और आकृति भी . इसी तरह वरणात्मक मंत्रों से जब वो गुटिका युक्त होगी तो आप शून्य मंत्र को उसके सामने सिद्ध कर जिस भी वस्तु या पदार्थ का चिंतन करेंगे वो शून्य से आप के लिए सृजित हो ही जाएगी. क्यूंकी वो मंत्र उस गुटिका से क्रिया कर आपके चिंतन मे आए हुए पदार्थ के वर्णों को संगठित कर एकरूपता प्रदान कर अस्तित्वा मे ला देगा.

अगले लेख मे आंतरिक ,आत्मिक कीमिया और रक्त-बिंदु, श्वेत बिंदु क्रियाओं का वो रहस्य आपके सामने उद्घाटित होगा जो निश्चय ही रस-तन्त्र के गूढ और गोपनिय आयामो से आपको अवश्य ही परिचित करवाएगा.शायद तब आप समझ पाए की सदगुरुदेव के कई ऐसे पक्षा हैं जो की हम समझ ही नही पाए या कभी हमने जानने की कोशिश ही नही की.

During the discovering period of Ras-tantra and with blessings of beloved and revered Sadgurudev, I got introduced to such a surreal divine sources. Because of some genuine reasons it was kept secret and by the way of Gurumukhi parampara it got transferred time by time to all disciples. Well, along with this information I would like to tell u all that till the time all these was untouched from years n years. The reason behind this was the parameters which one should have for getting this precious knowledge was also unrevealed.

Now it is possible to acquire benefit from this with blessings of Sadgurudev. It is because Sadgurudev's thinking is always exceptional from other erudite and savant persons. As per intellectual people the knowledge must be dispersed as per the deserving criteria set by themselves. But here our great Sadgurudev always used say that one who would be having a bit of fecundity (urvara shakti) there the litmus seed will turn into a budding, precocious fruitful tree.

Therefore the judgment criteria should lie down there with the aspirant itself as he is the best judge of himself. Yes, only those can achieve the benefits who will imbibe and assimilate the experimental form of knowledge in desired manner. Commonly all the aspirant and disciple are curious to know more about the Art of flying (Khechratva ya akash Gaman) and some of them who have little bit of knowledge also aware about the importance of Kumbhak which helps the body to uplift and fly in air.

But do you know the fact that it is not possible by normal Kumbhak. Because due to kumbhak one can easily uplift the body in air but cannot be able to talk with anyone in this period. Even some of them loose their contact with outer knowledge. Apart from this there are chances of getting harm by the vertical atmosphere waves which results into downfall……By doing Kiraat Kumbhak the body becomes shunyamay.

It enhance the power of Samagra body by miniature and transmit it in the better form. By making the body in pure sanity and inserting air completely in any part of body termed as Kiraat kumbhak. By this kumbhak the body can be filled with impure air. And when we experience the hollowness (shunya) stage, in this process the outer senses also remain active and harmless. Even conversation is also possible. Along with reflection, appearance and sansparshan of tremendous potential and powerful tejorashi knowledge doesn’t get destroy. But do you think is it that easy???? Hmmm answer is No…

But due to alchemy (parad) in Ras-Tantra (which already finished the journey from ras to rasendra – means sanskar of divyoshadhi is done sucessfully, Jaran of gold and stones) This is how the formation of gutika takes place and during this phenomenon specially the Navarna mantra chanting is done.

The Siddha kunjika stotra is also chanted for utkilan and siddhikaran. But don't forget to pronounce the khaam kheem khoom khechari tatha.. matlab he devi khaam kheem…in the form of Khechartatva bestows the power of fling in air(she devi khaam kheem… ke roop me aap khecharatva shakti pradan karne vali ho)… .. aur ye kham beej hi ksham and it becomes the aakash beej which controls the gravity of body and gives u the divine power of khechratva. This is possible only by the Navarna Mantra. this must be done in sequential format under the instruction of revered Guru.

•The veryfirst atmosphere of Sunrise (suryoday) is know as Rik-Mandal. The sixteen rays of ruling power (adhishthatri shaktiyon) are known as Shodash matrakaon. And the complete form of Shodash matrakaon is called as Raaj Rajeshvari Shodashi Tripur Sundri. When utkilan is done and activity called abhishinchitikaran is going on, we get the knowledge of Surya Vigyan. It can also be done by the external equipment i.e. lens or can be successfully accomplished without help of any other external factors.

For this the gutika is produced and siddha by the sampoorna varna mantra. Each varna contains individual power. Each of them consists of dhyan and mantra in individual form. Each one of them need to be excited till the time and by that varnatmak mantra we produce the gutika or Vigrah. In this way Gutika becomes the shunya siddha and after Padartha parivartan results into surya siddhi. Now the question is what is varnatmak mantra???

Now in short I would explain that there is no meaning of Varna ,but with that 'Ka" if the addition of 'pa+uu+ra' is done then the word "Kapoor" is formed which have its own meaning and shape. In the same way when this gutika is inclusive of varnatmak mantra with the help of siddh shunya mantra, if you will ponder any thing in your mind right the moment you will find the identity of it and will appear in front of us.

In my next article you will find the information about Inner, Astral alchemy and Rakt-bindu, the secret of Shvet-bindu activities which would definitely introduce you all from the enigmatic and hidden secret dimensions of Ras-Tantra. May be then only all will understand the unrevealed aspect of Sadgurudev.

अद्भुत सरल धन दायक लक्ष्मी प्रयोग

EFFECTIVE SARAL LAKSHMI PRAYOG

अब इसे एक बार तो करके देखिये

जीवन में लक्ष्मी की अपनी ही महत्ता हैं और इस लिए हमारे मनीषियों ने बहुत सोच विचार कर एक पूरा मॉस का नाम ही लक्ष्मी मास या कार्तिक मास रख दिया जिसका हर दिन ही दीपावली के सामान ही महत्वपूर्ण हैं , और सदगुरुदेव जी ने भी यह लिखा हैं जो चतुर होते हैं और जिन्हें जीवन में आगे जाना हैं वह इन 30 दिन का उपयोग साधनात्मक रूप से कर के मतलब पूरे 30 प्रयोग संपन्न अपने पूरे भाग्य को ही बदल लेते हैं, क्योंकि वह यह अच्छी तरह से जानते हैं की जीवन को यूँ ही रो झिंक कर नहीं काटा जा सकता हैं उसके लिए तो पौरुष वांन रुख कर साधना मय तो होना ही पड़ेगा ही .

और इसी लक्ष्मी मय बनने की श्रंखला में एक सरल सा प्रयोग ..

मंत्र : ॐ सरस्वती इश्वरी भगवती माता क्रां श्रीं श्रीं श्रीं मम धन देहि फट स्वाहा ||

इसे आपको प्रतिदिन करना हैं रोज़ 108 बार कमसे कम 40 दिन तक .और यदि आप सामान्य साधनात्मक नियमो का पालन करते हुए करते हैं तो निश्चय ही आपके जीवन में लक्ष्मी तत्व अनुकूल होता ही हैं., जिस तरह महाविद्या साधना में तेल का दीपक लगाया जाता हैं उसी तरह लक्ष्मी साधन में घी का दीपक लगाया जाता हैं कुछ मिठाई भी भगवती लक्ष्मी को अर्पित करे.. सुबह या शाम कभी भी किया जा सकता हैं वस्त्र आसन माला आदि का कोई प्रतिबन्ध नही हैं पर यदि आप पीले रंग के वस्त्र का प्रयोग करे तो ज्यादा उचित रहेगा यदि रात्रि काल में जप करते हैं तो पश्चिम दिशा की तरफ मुख करके करे .

****

Ek saral lakshmi prayog

There a importance of lakshmi tatv in life that's why our great one manishi /tantra scholar has after a much consideration decide named a one complete month lakshmi mass or kartik mass. And a every single day of that month is as equal as the Deepawali , and sagurudev ji has written that those who are cleaver and want to go ahead in life they surely use each and every day of this month and do 30 prayog and became able to change their fortune from bad to good, since they knew that life can not be pass like this way of depression and frustration, on must has to be sadhanamay ..

And to make this possible here Is this simple prayog

Mantra :

Om sarswati ishwari Bhagvati mata kraam shreem shreem shreem mam dhan dehi phat swaha ||

You have to chant 108 times in every day for next at least 40 days, and follow every possible sadhantmak rules than surly this lakshmi tatv bless you , and like earthen lamp light up already filled up with oil in mahavidya sadhana so here in this sadhana use ghee instead of oil.

And offer some sweets to bhagvati lakshmi , and there not any restriction re3garding the color of clothes and aasan and mala but if you use yellow color that would be fine, and this can be done either morning or in night , in night time your direction would be west facing.

अचूक टोटके-जिनका प्रभाव होता ही है

TOTKA - VIGYAN

. १.पीपल के वृक्ष की जितनी भी प्रशंशा की जाये कम हैं यह आपके भाग्य तक को बदलने समर्थ हैं यदि आप पीपल के निचे एक तेल का दिया लगा कर बिना पीछे मुड़े वापिस आ जाये तो कुछ ही दिनों में धन लाभ की अवसर बनने लगते हैं.

२, जिस तरफ का स्वर चल रहा हैं उस तरफ का ही पैर सबसे पहले निकाल कर घर से बाहर निकले तो वह दिन भी अच्छा होगा ,

३, अनेको विद्वानों का कथन हैंकि यदि लक्ष्मी जी के सामने 9 बत्तीया वाला दीपक लगाया जाये तो यह आर्थिक दृष्टी से बहुत ही अच्छा रहता हैं ,

4जीवन में जब कभी भी किसी कन्या की शादी हो रही हो उसमे अपना योग दान करे या निराश्रित कन्याओ की शादी में योग दान करे यह भी अनेक अशुभो को दूर कर आपको शुभता दें में समर्थ हैं ,

5.नारियल को राहू का प्रतीक माना गया हैं , यही शनिवार को नारियल को बहते हुए पानी में बहाया जाये तो राहू गत समस्या से अनुकूलता होती हैं.

6. जीवन में अधिकतर समस्या किसी भी कार्य में अत्यधिक देरी से ही सामने आती हैं और इसका कारण शनि ही होता हैं और इसकी शांति के कुछ उपाय में से एक शनि वार को भगवान शंकर में काले तिल को चढ़ाना भी हैं.

7.शनी की शन्ति का उपाय जो बहुतायत से प्रचलित हैं वह हैं की काले घोड़े की नाल की एक छल्ला जिसे बना कर अगुली में पहिना जाये .

8 वहीँ विवाह में अनावश्यक यदि विलम्ब हो र हा हैं तो ऐसे तो इसके अनेक करण हो सकते हैं पर एक सरल का उपाय यह हैं की किसी भी केले के पेड़ के नीचे गुरूवार के दिन अगरबत्ती लगाये .

९. इशान दिशा को काफी पवित्र माना जाता हैं और इस दिशा में पूजा स्थान को रखने को कहा जाता हैं , पर आज यह कहाँ संभव हैं पर इसके कारण बहुत सी समस्या का सामना हमें करना ही पड़ता ही हैं, तो इस दोष की निवृति के लिए " ॐ नमः शिवाय" मन हा आधिकाधिक जप करना ही चाहिए .

१० घर पर जो जो भी सोफा सेट लगाया जाये उसकी दिशा इस तरह से रखी जाय की यदि उस पर घर का मालिक बैठता हैं तो उसे के ठीक सामने दक्षिण दिशा नहीं होना चाहिए .

****

1, the pipal tree is very much importance in our way of life this Is able to change your fortune ,if light a earthen lamp filled with oil nearer to it s roots and come back without looking than with in short of span of time you will find the opportunity to get financial benefit.

2, if you coming out from your house than takeout that feet first ,that direction is nostril air is running means swar.

3.many scholar suggest that if earthen lamp with 9 battiya light up in front up of goddess lakshmi, it will be good for financial gain.

4.when ever you find marriage of any girl happening give whatever you can gives in term of help in financial matter or other desired things, or for those girls marriage who have not have unfortunately any shelter , this will change your luck .

5, naraiyal (coconut) is resentative of Rahu and if you throw the nariyal in running water than it will help you if any problem that comes because of Rahu planet

6. whenever delay occurs in our life any work , many times this happens because of Saturn planet so you offer black till on Bhagvaan Shankar this help to reduce the problem.

7.if you are having problem with some dosha because of Saturn planet why not try to wear a ring made of nall of black hoarse.

8 there may be many reason for delay in marriage but light up a agarbatti below the a bananas tree ,specially on Thursday this help you.

9. ishan direction is considered very holy , normally our prayer room should be in that direction but in modern life this is always not happens than to reduces this dosha chant “om namah shivaay “ mantra as much as you can.

10 in home sofa set should be placed in such a way that when ever the house owner sit on that , should not south direction facing.

आयुर्वेद : कुछ घरेलू उपाय

AYURVEDA : SOME TIPS

.

जीवन का पहला सुख तो सभी अब जान ही गए हैं "निरोगी काया " पर इस सुख को लगातार स्थायी कैसे रख जाये इस हेतु कुछ सरल से उपाय आपके सामने हैं

1, नीम की सदियों से एक तेज antiseptic माना गया हैं और हल्दी का भी लगभग यही गुण हैं तो यदि कोई घाव ठीक नहीं हो रहा हो तो पहले नीम की पत्तियोंको तवे पर गर्म कर से और फिर इसमें हल्दी मिला कर एक पट्टी में रख कर घाव पर बांधे आराम होगा, याद रखे सीधे नहीं बल्कि पट्टी में बाध कर लगाना हैं .

2,जब कभी भी कोई भी मास पेशियों की चोट लग जाये तो सीधे ही गर्म सिकाई न करे बल्कि पहले दो दिन तो कम से कम बर्फ से ही सिकाई करे हाँ इसके बाद आप हलकी गर्म सिकाई कर सकते हैं पर फिर भी आराम न दिखे तो डॉक्टर की सलाह अवश्य ले

3. मोच आ जाने यदि किसी कारण वश तो बेल की पत्तिया ले उसे गुड के साथ पका ले और इसका लेप उस मोच वाली जगह पर लगाये दिन मे कई बार यह करे ३/४ दिनमे ही आशातीत लाभ होगा ,

4. जिनके भी पेट में कीड़े हैं वे सभी यदि प्रातः काल दो तीन लाल टमाटर कच्चे चवा चवा करखाते हैं तो यह बहुत ही लाभदायक पाया गया हैं हैं .

5. कब्ज से आज कौन नहीं परेशां होगा , अनियत्रित जीवन शैली का यह अभिशाप हैं ही रात को जब आप सोने जा रहे हो आप एक चम्मच सौफ अच्छी तरह से चवा चवा कर खा ले और इसके बाद एक गिलास हल्का कुनकुना पानी पी ले आपको लाभ होगा

6. यूँ तो प्याज को त्याज ही कहा गया हैं पर यह भी एक गुणकारी वस्तु हैं यदि आप कच्ची प्याज खाते हैं तो आपके मुख के कीड़े नष्ट होजाएंगे,

7. ठीक इसी तरह लहसुन का भी गुण हैं कम से कम एकं कली तो कच्ची खाना ही चाहिए यह भी अनेक रोगोंमे के लिए एक बहुत लाभदायक सिद्ध हुयी हैं, जैसे पेट सम्बंधित

8, एक लहसुन को बिना तले चवा कर खा जाएँ आपको स्वास सम्बंधित रोगों में लाभ पहुंचेगा .

9. प्याज का नियमित सेवन से रक्त जनित रोग भी दूर होते हैं

1० .दमे से प्रभावित व्यक्ति तो को नमी वाली जगह से दूर रहना चाहिये , और उसे संभव हो तो सरसों के तेल से मालिश अपनी करना चाहिये .

****

Every body knew about the very first happiness ,"Nirogi kaya"means to have healthy body but to keep this such /happiness so for this here are some upay..

1/ the neem leaves are considered antiseptic and turmeric also has the same effect , so if any wounds are not getting healed so neem leaves mild heated on any tava and mix turmeric and this paste should be covered in a cloth and applied on that wounds , it helps.

2, when ever you are feeling any muscular pain do not apply very first on that any hot massage , actually very first two days you have to massage that area with ice already covered in cloth and after two day than can apply little bit hot massage , if still situation is not seems to good, than , must consult ant doctor.

3. if having “moch” than apply twice or thrice paste prepared with leaves of bel tree and gud. Within 3 or 4 days you will feel much recovery.

4.those who are having some “keede” in his smooch must eat two three lal tamatar (red tomato) every morning . this helps a lot.

5.who is not worried about indigestion , this is the bye product of modern un controlled life style, when your are going to sleep in night take a small spoon full of sounf and thoroughly chew it and take a mild heated hot water this will help a lot,

6 normally , in many house many people still have a distance from onion ,if you eat raw onion so this will destroy/remove many bacteria in your mouth.

7. like that one should take one or two “lahsun” raw kali and this also very helpful in many dieses .like stomach related .

8.if you eat daily one raw lahsun kali this will removing “dama” dieses from your lungs.

9.and the same way eating onion remove many of the blood impurities.

10, the person who is suffering from dama , have to keep a distance from the place where too much humidity have, and have massage with sarso oil thi s message also help a lot.

In the End

आप सभी गुरु भाई बहिन और मित्रो के दिन प्रति दिन के बढ़ते हुआ स्नेह हमें लगातार और अधिक मेहनत को प्रेरित करता हैं अब ये अंक समाप्ति की ओर हैं, आपको ये अंक कैसा लगा , हम सभी को बिश्वास हैं की यह अंक आपके अपेक्षाओ पर खरा उतरा होगा .

इसी तरह हम सदैव आपके आशाओं पर खरे उतरें ,सदगुरुदेव भगवान से यही प्रार्थना हैं .

अगला अंक - शक्ति सायुज्य अघोर साधना महाविशेषांक होगा इसके विस्तृत विवरण के लिए ब्लॉग पोस्ट का इंतज़ार करे

विगत अंक की भांति इस बार भी मैं अपने सभी गुरुभाई ,बहिनों से यही निवेदन करना चाहूँगा कि , इस इ पत्रिका ओर ब्लॉग के बारे में .. समान विचार धारा वाले व्यक्तियों को अवगत कराये / बताये .जिससे सदगुरुदेव जी के दिव्य ज्ञान से वे भी लाभान्वित हो सके .

With the ever increasing /growing your support and love/sneh gives us more and more strength to work hard to come up to your expectation ,we here,have a faith that this issue come up your expectation, like that we work for you all is the prayer to beloved sadgurudev ji.

Our next issue will be Shakti SAayujy Aghor sadhana Maha Visheshank for details of that plz wait for related post in the blog.

Like in previous issue ,this time also make a deep request to you all as our guru brother and sister please inform other guru brother about this e magazine and blog.

Plz do visit blog

Nikhil-alchemy2.blogspot.com & yahoo group Nikhil alchemy

We

Are praying to our beloved Sadgurudev ji

Specially on your

Sadhana Success , Spiritual Achievement and Material Growth

and

your devotion to Sadgurudev ji"

JAI SADGURUDEV